Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 50 • 20 - 26 सितंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-09-2021 • पेज : 16 • ₹ 10

अर्हत उवाच

जहा आसाविणि णावं,
जाइअंधो दुरूहिया।
इच्छई पारमागंतुं, अंतराले
विसीयई।।

जन्मान्ध मनुष्य सच्छिद्र नौका में बैठकर समुद्र का पार पाना चाहता है, पर वह उसका पार नहीं पाता, बीच में ही डूब जाता है।

संवत्सरी महापर्व पर मन में क्षमा धारण कर द्वेष की कलुषता धोएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ११ सितंबर, २०२१

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ का पावन पर्व संवत्सरी महापर्व। वर्ष भर में एक दिन आने वाला महापर्व। लौकिक पर्वों में तो खाने-पीने का आनंद लिया जाता है, पर संवत्सरी तो त्याग का पर्व है, इसलिए इसे महापर्व की उपमा दी गई है।

मोक्ष मार्ग के पथदर्शक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सांवत्सरिक महापर्व पर मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज एक महापर्व का दिवस है, जिसे संवत्सरी के रूप में अभिनीत किया जाता है। जैन शासन में यह महापर्व भाद्रव शुक्ला चतुर्थी या पंचमी को आता है।

यह पर्व अध्यात्म की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण दिवस है। मुझे तो संवत्सरी के समान कोई दूसरा पर्व या दिवस नजर नहीं आता है। हमारे संप्रदाय में यह कभी भाद्रवा शुक्ला पंचमी या चतुर्थी को आयोजित हो जाता है। संवत्सरी महापर्व की पृष्ठभूमि में ये सप्त दिवस और जुड़े होने से यह अष्टाह्निक पर्व हो जाता है।

आज के दिन कितने लोग उपवास रत होते हैं। अष्ट प्रहरी, छः प्रहरी, चतुर्थ प्रहरी पौषध भी होते हैं। यह पर्व क्षमा और मैत्री से जुड़ा हुआ पर्व है। आज के दिन तो सभी से अंतर्मन से क्षमा माँगनी और देनी चाहिए। किसी से वैर-विरोध की, राग-द्वेष के रूप में गाँठ न रहे। यदि लगी हुई हो तो यह खोलने का दिवस होता है। वैर-भाव को धो डालने का दिवस होता है। ८४ लाख जीव-योनि से खमतखामणा का

विशेष दिवस होता है।

आज के दिन सबसे खमतखामणा हो जाना चाहिए। एक वर्ष से ज्यादा गाँठ रह जाए तो सम्यक्त्व को भी खतरा रह सकता है। समाप्ति की स्थिति हो सकती है। सम्यक्त्व को रखने के लिए अवैर-भाव की इस रूप में अपेक्षा होती है। पूज्यप्रवर ने 'आयो जैन जगत रो पावन पर्व संवत्सरी रे' गीत का सुमधुर संगान किया। आज के दिन तो, आने वाले लोग भी साधु-साध्वियों के पास आ जाते होंगे।

जैन शासन से जुड़े लोग जैनी कहलाते हैं, तो उनमें अहिंसा का संस्कार भी रहे। अहिंसा, संयम और तप धर्म है, इनका महत्त्व है। गृहस्थों की जीवन शैली में अहिंसा, संयम और तप तत्त्व जुड़ा रहना चाहिए। सभी शाकाहारी रहे। धर्म का अपना सिद्धांत हो सकता है, उस पर सब अडिग रहें। यह एक प्रसंग से समझाया। विदेशों में तो आज शाकाहार की बात चल रही है। जैन शासन के लोग भोजन व पेय संबंधी अशुचि से बचें। नशीले पदार्थों का प्रयोग न हो।

एक प्रसंग से समझाया कि शराब को मिट्टी में नहीं मिलाएँगे तो शराब हमें मिट्टी में मिला सकती है। अणुव्रत का भी नियम है—नशामुक्ति। नशा त्याज्य है, मद्यपान मुक्त रहें। भ्रांत-चित्त वाला व्यक्ति पापाचार में जा सकता है। दुर्गति में जा सकता है। नशे का त्याग करने से संयम हो जाता है। मांसाहार के त्याग से भी संयम होता है।

जैन धर्म में नमस्कार महामंत्र एक स्थित महामंत्र है। णमोकार को हृदय में, दिमाग में और गले में धारण करने वाला जैन है। बचपन से ही बच्चे को नवकार मंत्र सिखा दिया जाए। जैन जीवन शैली में जैनत्व मुखर होना चाहिए। जैनत्व वाणी में ही नहीं, आचरण में भी आना चाहिए।

जैन शासन के आगमों-ग्रंथों का स्वाध्याय होना चाहिए। देश में रहें या विदेश में रहें, जैन धर्म के सिद्धांतों को समझना चाहिए। अच्छे संस्कार रहने चाहिए। संस्कारों की बड़ी संपदा है। यह एक प्रसंग से समझाया कि एक राजा संस्कार-संपन्न होना चाहिए। ज्ञानशाला और क्या है? संस्कार देने का प्रयास और बचपन में ही धर्म से जुड़ने का प्रयास है। जीवन विज्ञान भी शिक्षा जगत से जुड़ा है, जो संस्कारों का पोषण करने वाला है।

यह आज का मैत्री पर्व है। पर्युषण में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के संबंध में प्रवचन करते हैं। भगवान की अध्यात्म यात्रा से भी संस्कारों का ग्रहण हो सकता है। नयसार का सत्ताइसवाँ भव, अवसर्पिणी काल का चौथा अर के साढ़े पचहत्तर वर्ष शेष थे। नयसार की आत्मा आषाढ़ शुक्ला को देवलोक से च्युत होकर जंबू द्वीप के दक्षिणार्द्ध भरत वर्ष के दक्षिण ब्राह्मण कुंड नगर के कोडान्न सभद्र ऋषभदत्त की भार्या जलंधर गौत्रीया देवानंदा की कुक्षी में वह जीव स्थित होता है।

भगवान महावीर के जन्म के साथ एक विशेष प्रसंग जुड़ा हुआ है कि गर्भ संहरण की बात भी होती है। भगवान के कल्याणकों के साथ हस्तोत्तर नक्षत्र बहुत बार जुड़ा हुआ है, जिसे उत्तरा फाल्गुणी नक्षत्र जिसका नाम है। च्यवन (गर्भ में स्थिति) जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान-केवलदर्शन की प्राप्ति उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में होता है। गर्भ संहरण के प्रसंग को समझाया।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आत्म निर्जरा का विशिष्ट साधन है जप : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ६ सितंबर, २०२१

जिन शासन के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों का विवेचन करते हुए फरमाया कि परम पावन भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा नयासर जो भगवान महावीर के २७ भवों में पहले भव में हुए। नयसार छठे भव में पुष्पमित नाम का ब्राह्मण हुआ। वहाँ से वह सौधर्म देवलोक में उत्पन्न हुआ।

आठवें भव में अग्निहोत्र ब्राह्मण बना। जीवन के अंतिम भाग में परिव्राजक बन गया। नौवें भव में ईशान देवलोक में देव बना। दसवें भव में अग्निभूत ब्राह्मण बना और आगे अंत समय में परिव्राजक बन गया। ग्यारहवें भव में तीसरे देवलोक में देव बना। बारहवें भव में फिर मनुष्य गति में उत्पन्न हुआ। तेरहवें भव में माहेंद्र चौथे देवलोक में वह देव बना। चौदहवें भव में स्थावर नामक ब्राह्मण बना। पंद्रहवें भव में पंचम देवलोक में देव बना।

सोलहवें भव में विश्वभूति नामक मनुष्य रूप में पैदा हुआ। चरित्र भी ग्रहण किया। परंतु साथ में निदान भी कर लिया। निदान कर लेना एक अपनी साधना को मानो कि थोड़े में बेच देना सा हो सकता है। जो साधु शीलव्रत व महान फल देने वाले होते हैं, उनको नष्ट कर जो धृति से दुर्बल है, वो एक कांकिणी को खरीदता है। इसमें से हम दो बातों को प्रेरणा के रूप में ग्रहण कर सकते हैं। जो साधुपन को भोगों के लिए छोड़कर चला जाता है या इच्छा करता है, वह मानो करोड़ की संपति में से छोटी सी कांकणी मानो कोड़ी को लेना चाहता है।

जो साधु निदान कर लेता है कि मेरी तपस्या-संयम की साधना का फल हो, मैं प्रबल बलशाली बन जाऊँ। वह भी थोड़े में बहुत खोने जैसी बात हो जाती है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 सितंबर, 2021

✦ *दूसरों पर अनुशासन करने वाला पहले स्वयं पर अनुशासन करे तो व्यवस्था सम्यक् हो सकती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत चेतना दिवस

संस्थाओं में आर्थिक सुचिता बनी रहनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ८ सितंबर, २०२१

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमणजी ने पर्युषण पर्व के पाँचवें दिवस अणुव्रत चेतना दिवस पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त–अणुव्रत आंदोलन। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे नियम जिन्हें जैन-अजैन कोई भी अपना सकता है। अपनी जीवनशैली में अणुव्रत के नियमों को ग्रहण कर जीने की दिशा और दशा बदली जा सकती है। अणुव्रत का मूल लक्ष्य है–नैतिक चेतना का विकास।

कई-कई साधु-साध्वियाँ एवं गृहस्थ अच्छे गीत जो अध्यात्म से भरे होते हैं, गाते हैं। कई तपस्या भी करते हैं। छोटी उम्र में बड़ी तपस्या कर लेते हैं। यह भी अपने जीवन की एक उपलब्धि है। जीवन में भिन्न क्षेत्रों में विकास हो सकता है। उपलब्धि होने पर भी मान-अभिमान हीनता रहे।

कुछ पाया है, और पाने का प्रयास करूँ। विकास की दिशा में आदमी आगे बढ़े। हमारे धर्मसंघ में कई वैदुष्य चारित्रात्माएँ एवं समणियाँ हैं। डिग्रियाँ प्राप्त हैं। ज्ञान का विकास होना बहुत बढ़िया है। निरहंकारता रहे। मरिचि में भी अभिमान आ गया था कि देखों मैं पहला वासुदेव, मेरे पिताजी पहले चक्रवर्ती और मेरे दादा पहले तीर्थंकर हैं। मेरा कुल कितना उत्तम है। मैं वासुदेव के साथ चक्रवर्ती एवं अंतिम तीर्थंकर भी बनूँगा। गर्व का भाव आता है, तो अशुभ नाम का बंध होता है।

संघबद्ध साधना का अपना महत्त्व है, परंतु वर्तमान में एकाकी साधना संभव नहीं है। बंधन भी मुक्ति का निमित्त बन सकता है। अकेला-अकेला है। मरिचि ने एक चेला भी बनाया। परंतु उसे सेवा नहीं मिली। धर्मसंघ की यह खास बात है कि वहाँ सेवा प्राप्त हो सकती है। यह अनेक का लाभ है। मरिचि आयुष्यपूर्ण कर पाँचवें देवलोक में उत्पन्न होता है।

हमारे धर्मसंघ में सेवा का महत्त्व है। साधु-साध्वियाँ कितनी सेवा करते हैं। मुझे अच्छा लगता है। सेवा से मेवा मिलता है। सेवाएँ अलग-अलग हो सकती हैं। सेवा मन से करो। सेवा लेने वाले को चित्त समाधि पहुँचाने का प्रयास हो। यथा अपेक्षा सेवा का विकास होता रहे। सेवा में पुरानी बातें बीच में न आएँ। ये हमारे संघ की परंपरा है। सेवा करने का विशेष प्रयास रहे।

जीवन का अंतिम समय साधना में बीतना अच्छा है। मुनि सुरेश कुमार जी भी विशेष साधना करना चाहते हैं। संघ में साधना करना अच्छी बात है। उनके जीवन से प्रेरणा लें। साधु-साध्वियों एवं समणियों से उनके विचार एवं जो प्रवचन किया उसके संबंध में जानकारी ली।

आज पर्युषण चेतना दिवस है। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत की बात बताई। जैन धर्म में एक ओर बारह व्रतों की बात आती है। दूसरी तरफ अणुव्रत की बात है। अणुव्रत से नैतिकता का, संयम चेतना का संप्रेक्षण जागे। तेरापंथ धर्मसंघ में कई संस्थाएँ अणुव्रत का कार्य कर रही हैं। संस्था के माध्यम से कार्य का क्षेत्र मिल जाता है। कार्य अच्छा हो सकता है।

अणुव्रत विश्व भारती वर्तमान में और गरिमावाली, ज्यादा दायित्व वाली बन गई है। जीवन-विज्ञान का कार्य इसके अंतर्गत आ गया है। अणुव्रत की आचार संहिता बनी हुई है। अहिंसा यात्रा भी अणुव्रत आंदोलन से जुड़ा हमारा एक उपक्रम है। अणुव्रत में आर्थिक-असूचिता से भी बचने की एक बात है–नैतिकता की बात है।

संस्थाओं में आर्थिक असूचिता से मुक्ति रहे। कार्य एक नंबर का हो तो पैसा दो नंबर का न हो। नैतिकता मूल आत्मा का लाभ है। आर्थिक संबंधों में प्रामाणिकता रहे। सदाचार रहे। संस्थाओं के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक भी हमारे चारित्रात्माएँ हैं। नशामुक्ति अणुव्रत का ही प्रचार है। वैसे श्रावकों के बारह व्रत हैं ही पर गुरुदेव तुलसी ने इसे अणुव्रत के माध्यम से एक व्यापक रूप दिया। अजैन भी अणुव्रत से जुड़ने लग गए है। यह अणुव्रत का व्यापक रूप है।

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि विश्व में बढ़ रहे भ्रष्टाचार और अत्याचार को मिटाने के लिए अणुव्रत की आवश्यकता है। अगर व्यक्ति जीवन में सीमाकरण कर ले तो बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अणुव्रत एवं साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने धर्म के दस प्रकारों पर उद्बोधन दिया। शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी ने भी अपने उद्गार प्रकट किए। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

वाणी संयम दिवस

वाणी का उपयोग सारभूत और विवेकपूर्ण हो : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ७ सितंबर, २०२१

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पर्युषण पर्व के चतुर्थ दिवस पर मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि नयसार का जीव मरिचि के भव में है। भगवान ऋषभ का संसारपक्षीय पौत्र बनने का एक सुअवसर मानो प्राप्त हुआ है। भगवान की देषणा सुनकर मरिचि को वैराग्यवान बनने का भी मौका मिला। वह दीक्षित हो, साधु होकर आगमों का अध्ययन करने लगा।

हमारे यहाँ व्यवस्था है कि तीन वर्ष के संयम पर्याय के बिना अमुक आगमों का विधिवत वाचन नहीं किया जाता हैं। जब तक इनका वाचन नहीं किया जाए तो कुछ-कुछ कार्य साधु को नहीं करने होते हैं।

एक कठिनाई मुनि मरिचि को आ रही है कि गर्मी को सहना कठिन हो रहा है। भीषण प्यास का परिषह होता है, सहना कठिन हो रहा है। रात्रि में पानी नहीं पीना तपस्या है। परिषह विजयी बनना साधु का धर्म होता है। मरिचि ने सोचा मैं साधुपन नहीं पाल पाऊँगा। पर घर में भी नहीं जाना चाहता। साधुपन का पालन न हो तो साधु को साधु-संस्था में नहीं रहना चाहिए।

मरिचि दोनों के बीच का रास्ता निकालकर नए रूप में संन्यासी विधान बनाकर, उसके अंतर्गत अपनी साधना करता है। त्रिदंड-छत्र धारण करना, काषाण-गेरुआँ वस्त्र रखना शुरू कर देता है। त्रिदंड से विजित हो जाता है। मैं मोह से आसन्न हूँ, यह बात द्योतक के रूप में मैं छत्र को धारण करूँगा। कषाय से प्रभावित हूँ इसलिए गेरुआँ वस्त्र धारण करूँगा।

अब मरिचि न साधु बना, न गृहस्थ बना, बीच का रह गया। परिमित पानी से स्नान भी करता है। पानी का संयम करना भी अच्छा होता है। गृहस्थ लोग भी पानी का अनावश्यक प्रयोग न करें। अनावश्यक व्यय न हो। अहिंसा और संयम की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है। मरिचि शरीर पर चंदन का लेप करता है, वह खड़ाऊ पहनकर इस तरह अपना परिवेश बनाकर साधक बन अपने ढंग से साधना करता है।

चक्रवर्ती भरत ने परिषद में भगवान ऋषभ से प्रश्न किया कि भगवन! इस अवसर्पिणी काल में कोई ऐसा जीव है, क्या जो आपके समान तीर्थंकर बनेगा। भगवान ने उत्तर दिया कि इस समवशरण में तो ऐसा कोई जीव नहीं है। समवशरण के बाहर तुम्हारा बेटा मरिचि बैठा है, वो मेरी तरह इस अवसर्पिणी काल में अंतिम तीर्थंकर बनेगा। मरिचि वासुदेव और चक्रवर्ती भी बनने वाला है।

अपने बेटे के बारे में ये शुभ सूचनाएँ भरत ने सुनी। पिता के लिए यह एक आह्लाद का विषय बन सकता है कि मेरा पुत्र कितना आगे बढ़ने वाला है। माता-पिता यह ध्यान दें कि उनकी संतान में संस्कार अच्छे हों। समाज की संस्थाएँ भी भावी पीढ़ी में अच्छे संस्कार देने का प्रयास करते हैं। माता-पिता अपनी संतानों को अच्छा संस्कारित बनाने का प्रयास करें, यह काम्य है।

आज पर्युषण दिवस की व्यवस्था के अंतर्गत वाणी संयम दिवस है। वाणी हमारे जीवन का बार-बार काम में लिया जाने वाला तत्त्व-अंग होता है। आगम में निर्देश दिया गया है कि मित बोलो निर्दोष भाषा बोलो और विचारपूर्वक बोलने वाले बनो। इन तीन बातों में वाणी संयम का बहुत सार आ गया है।

वाणी में कभी आदमी बात को ज्यादा लंबा कर देता है। आदमी सारभूत बोलने का लक्ष्य रखे। वाणी के दो विष होते हैं–बात को बढ़ाना प्रलंबन करना, लंबा कर दिया और सार-लाभ कुछ है ही नहीं। वाणी के दो गुण हैं–परिमित वाणी और वाणी में सार होना चाहिए।

बोलने का उच्चस्तरीय तरीका है–परिमित बोलो, सारपूर्ण बोलो। वाणी संयम में भी विवेक हो। कहाँ बोलना, कहाँ नहीं बोलना है। बोलना या न बोलना कोई बड़ी बात नहीं है। बोलने और न बोलने का विवेक रखना बड़ी बात है। जहाँ बोलने की अपेक्षा है वहाँ बोलो। जहाँ अपेक्षा नहीं है, वहा मत बोलो। सिर्फ मौन करके बैठ जाना अच्छी बात है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

भौतिकवादी युग में संस्कारों को जीवित रखने का माध्यम है - ज्ञानशाला

फारबिसगंज।

डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। इस अवसर साध्वी पीयूषप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म के नवम अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने अपने जीवन में अनेक सपने लेते हुए, हर सपने को आकार देकर समाज के सामने नए आयाम दिए। अनेकों आयामों में एक महत्त्वपूर्ण आयाम है–ज्ञानशाला। भौतिक युग में संस्कारों को जीवित रखने का विकल्प है–ज्ञानशाला।

साध्वी दीप्तियशा जी ने ज्ञानशाला को संस्कारों की प्रयोगशाला बताया। ज्ञानशाला के बच्चों ने किसनो जी और भारमल जी के संवाद की सुंदर प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थी सृष्टि डागा, कृषा छाजेड़ ने संस्कार सप्तक से, आस्था बोथरा ने भिक्षु अष्टकम से और भाविका सेठिया, देव बैंगानी, हर्षित जैन, खुश खटेड़ की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

सभा अध्यक्ष निर्मल मरोठी, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका प्रभा सेठिया, पटना से समागत तनसुख बैद, सभा मंत्री मनोज बैंगानी ने वक्तव्य और गीतों से अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन नीलम बोथरा ने किया। उपस्थित सभी बच्चों को फारबिसगंज सभा की ओर से प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में पटना के अध्यक्ष, सिलीगुड़ी से तोलाराम सेठिया व फारबिसगंज के अनेक श्रावक उपस्थित थे।

वाणी का उपयोग सारभूत और...

(पृष्ठ २ का शेष)

कौन से दिमाग में कौन सा विचार अच्छा आ जाए, जो विचार कितना कल्याणकारी बन जाए। इसलिए मौके पर बोलना भी चाहिए। हमें वाणी मिली है, कहने की बात कहनी चाहिए। दूसरों को ज्ञान देने में वाणी का उपयोग करो। अच्छा लाभ मिलेगा। इसलिए हमें वाणी में एकांगी नहीं बनना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि वाणी को बोलने से पहले सोचना और बोलने के बाद तोलना चाहिए। वचन शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। बिना विचारे बोलने से कई बार अनजाने में अनर्थ हो जाता है।

कार्यक्रम में मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, मुख्य नियोजिका विश्रुतविभा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने वाणी दिवस पर गीत की प्रस्तुति दी। मुनि जयेश कुमार जी, साध्वी तितिक्षाश्री जी ने अपने भाव रखे। आचार्यप्रवर ने विभिन्न तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाए। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जप आत्म निर्जरा का विशिष्ट साधन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

निदान करके प्रायश्चित न करे तो घाटे का सौदा हो जाता है। सतरहवें भव में सातवें देवलोक में नयसार का जीव देव रूप में उत्पन्न होता है। वहाँ से च्युत होकर वापस मनुष्य बनता है।

अट्ठारहवें भव में नयसार का जीव एक राजघराने में पैदा होता है। त्रिपृष्ठ वासुदेव के जीवन वर्णन को विस्तार से समझाया। इस भव में इस अवसर्पिणी काल में प्रथम बलदेव, प्रथम वासुदेव व प्रथम प्रतिवासुदेव उत्पन्न होते हैं। आगम में ५४ उत्तम पुरुष बताए गए हैं–२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलदेव, ९ वासुदेव कुल ५४ । वहाँ प्रतिवासुदेव का नाम आगम में नहीं आया है। वैसे ६३ श्लाकापुरुष बताए गए हैं, उनमें प्रतिवासुदेव की गिनती आ जाती है।

प्रतिवासुदेव तो मारे जाने वाले हैं। उत्तम पुरुष हो और मारे जाएँ तो वो उत्तम पुरुष नहीं हो सकते। ऐसा कारण हो सकता है। नयसार के जीव ने सोलहवें भव में निदान किया था और अठारहवें भव में इतना बलशाली बना कि उसने शेर को भी मार दिया तथा प्रतिवासुदेव को भी मारकर वासुदेव के रूप में त्रिखंडाधिपति बन गया।

पूज्यप्रवर ने जप दिवस पर प्रेरणा देते हुए फरमाया कि जप आत्म शुद्धि के लिए किया जाना चाहिए। जप आत्म निर्जरा का एक बहुत बड़ा साधन है। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि त्याग धर्म की चेतना हर व्यक्ति के भीतर होनी चाहिए। भोग से त्याग की ओर कदम बढ़ाकर सुख की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि मंत्र की शक्ति आत्म शक्ति का जागरण करके चेतना को उर्ध्वमुखी बनाती है। नमस्कार महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला है। कार्यक्रम में मुनि मार्दव कुमार जी एवं साध्वी विवेकश्री जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने साधु-साध्वियों से तत्त्व संबंधी प्रश्न पूछे स्वयं जप का प्रयोग करवाया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संवत्सरी महापर्व पर मन में क्षमा धारण कर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हरिणमैषी देव द्वारा देवानंदा की कुक्षी स्थित गर्भ को त्रिशला की कुक्षी में और त्रिशला की कुक्षी में स्थित गर्भ को देवानंदा की कुक्षी में हस्तांतरित कर दिया जाता है। त्रिशला चौदह महास्वप्न देखती है और अपने पति महाराज सिद्धार्थ को बताती है। वर्धमान के गर्भ में हलन-चलन का प्रसंग फरमाया। संसार में माता-पिता का कितना उपकार होता है। सांसारिक और धार्मिक उपकार हो सकता है।

वर्धमान ने चिंतन किया कि मेरे स्पंदन न करने से माता इतनी दुःखी है। मैं उनकी उपस्थिति में दीक्षा नहीं लूँगा। सवा नौ मास का गर्भकाल संपन्न होता है। माँ त्रिशला ने चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्य रात्रि में ईसा पूर्व ५९९ और विक्रम पूर्व ५४२ में एक पुत्र महारत्न को प्रसूत-जन्म देती है। बच्चे का १२ दिन बाद नामकरण किया जाता है। नाम रखा गया–वर्धमान।

भगवान बाल्यकाल में स्कूल में भी गए। स्कूल में व्यवस्थित ज्ञान हो सकता है। पर वर्धमान तो विशेष ज्ञान के धनी जन्म से ही थे। वर्धमान की शादी भी हुई। संतान भी पैदा हुई। वर्धमान का पूरा भरा परिवार था। भगवान के माता-पिता पार्श्व-परंपरा के श्रमणोपासक थे। श्रमणोपासक बनना भी जीवन में महत्त्वपूर्ण बात होती है। माता-पिता अनशन कर स्वर्ग सिधार गए। उस समय वर्धमान की अवस्था २८ वर्ष की थी।

वर्धमान का गर्भ में लिया हुआ अभिग्रह पूर्ण हुआ। वर्धमान ने बड़े भाई नंदीवर्धन से दीक्षा की अनुमति माँगी, उस प्रसंग को भी विस्तार से समझाया। बड़े भाई की भी बात मानी। बड़ा भाई पिता समान हो जाता है। २ वर्ष गृहस्थ में और रहे, पर उन दो वर्षों में वे साधनारत रहे।

दो वर्ष बाद नौ लोकांतिक देव वर्धमान के पास आकर दीक्षा लेकर लोककल्याण करने की प्रार्थना करते हैं। वर्धमान ने दीक्षा पूर्व वर्षीदान भी किया। दीक्षा महोत्सव की तैयारियाँ होती हैं। मिगसर कृष्णा दशमी के दिन वर्धमान दीक्षा के लिए घर से अभिनिष्क्रमण करते हैं। ज्ञात खंड के अशोक वृक्ष के नीचे वर्धमान शिविका से नीचे उतरकर वस्त्रालंकरण उतार देते हैं। तीसरा प्रहर, वर्धमान पूर्वाभिमुख होकर पंचमुष्ठि लोचन करते हैं।

वर्तमान में हमारे धर्मसंघ में अपनी विधि है। गुरुकुलवास में कई साधु-साध्वियाँ हैं। वो लोच सफल है, जिसमें लोच कराने वाले को शक्ति आ जाए। वर्धमान ने लोच करके बेले की तपस्या में सामायिक चारित्र ग्रहण किया। जीवन भर के लिए सर्व सावद्य प्रवृत्ति का तीन करण-तीन योग से त्याग करते हैं। संकल्प करते हैं कि साधना काल में जो भी उपसर्ग आएँगे, समभाव से सहन करूँगा।

दीक्षा के बाद वहाँ से विहार कर देते हैं। कुर्मारग्राम में ग्वाले द्वारा उपसर्ग दिया जाता है। पर इंद्र उसे समझाते हैं। इंद्र ने प्रभु से निवेदन किया–'मानो प्रभु अर्ज मेरी, सेवा में रह जाऊँ' गीत का सुमधुर संगान किया। प्रभु ने कहा–देवराज! मैंने दीक्षा सुरक्षा के घेरे में रहकर नहीं ली है।

परम प्रभु शिखर के नैकट्य की ओर गतिमान है। प्रभु ने इंद्र से कहा–'जीवन का मर्म सुनाया, भगवान महावीर ने।' देवराज! ऐसा हुआ नहीं, होगा नहीं कि तीर्थंकर बनने वाले किसी देवेंद्र-नरेंद्र की निश्रा में केवलज्ञान को प्राप्त करें। वे अपने पराक्रम से केवलज्ञान प्राप्त करते हैं। प्रभु तो खुद अपनी आत्मा की सुरक्षा में लगे हैं।

प्रभु यात्रा चर्चा में आगे बढ़ते हैं। चंडकौशिक सर्प से भी मिलना हुआ है। नागराज को प्रतिबोध दिया। शूलपाणी यक्ष मंदिर में भी रहना हुआ। प्रभु अपनी साधना में लीन रहे। उस सत के अंतिम प्रहर में प्रभु को मुहूर्त भर नींद आ गई। निंद्रा काल में स्वप्न भी देखे। निराहार की तपस्या साधना भी कितनी चल रही है। लंबी-लंबी तपस्याएँ कीं। सबसे बड़ी तपस्या अभिग्रह के कारण ५ माह २५ दिन की हो गई। ऐसे प्रभु साधना करते-करते आगे बढ़ रहे हैं।

साधना काल का तेरहवाँ वर्ष। प्रभु जंभियग्राम के स्थान में ऋजुवालिका नदी के किनारे श्यामा गाथापति के खेत में बेले की तपस्या में गोदोहिका आसन में वैशाख शुक्ला दशमी का दिन, दिन का अंतिम प्रहर, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का योग है, ऐसी स्थिति में प्रभु विराजमान है। प्रभु ने कैवल्य को प्राप्त किया, जिस लक्ष्य के लिए प्रभु ने अभिनिष्क्रमण किया था। केवलज्ञान-केवलदर्शन प्रभु को प्राप्त हो गया। वे सर्वज्ञ-सर्वदर्शी बन जाते हैं।

बाद में प्रभु की देशनाएँ होती हैं, दीक्षाएँ होती हैं। गणधरों का क्रम भी बनता है। लगभग तीस वर्षों तक प्रभु जनोद्धार का, जनकल्याण का काम करते हैं। आखिर पावापुरी का अंतिम पावस प्रवास। लगभग साढ़े बहत्तर वर्ष की अवस्था, कार्तिक कृष्णा अमावस्या की रात्रि में प्रभु नश्वर देह को छोड़कर, आत्मा सिद्धालय-मुक्ति में पहुँच जाती है। मोक्ष में विराजमान हो जाती है।

भगवान के बाद गणधरों का शासन चलता है। उत्तरवर्ती अनेक आचार्य हुए हैं। पूज्यप्रवर ने हमारे तेरापंथ के पूर्वाचार्यों के बारे में भी फरमाया। भगवान महावीर के बारे में मैं इस अष्टाह्निक पर्व में बोला हूँ, इस माने में मानो मेरी जिह्वा धन्य हो गई।

आचार्यप्रवर ने द्वितीय चरण में मंगल देषणा देते हुए तेरापंथ के आचार्यों के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डाला।

बीच में पूज्यप्रवर ने छः प्रहरी पौषध-श्रावकों को पचक्खाए। बड़ी तपस्याओं के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर ने करवाए। तपस्वियों को मंगलपाठ की कृपा करवाई।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने संवत्सरी गीत का संगान किया। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने पर्युषण पर्व को आंतरिक पवित्रता का पर्व बताते हुए इसकी अनेक रूपों में व्याख्या की। दस घंटे से अधिक चले इस कार्यक्रम में समणी प्रणवप्रज्ञा जी, साध्वी विद्युतप्रभा जी, मुनि उदित कुमार जी, मुनि मोहजीत कुमार जी, साध्वी संवरयशा जी, मुनि संबोध कुमार जी, मुनि रमेश कुमार जी, मुनि प्रसन्न कुमार जी ने विभिन्न विषयों पर अपनी भावाभिव्यक्ति दी। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *अतीत से प्रेरणा ली जा सकती है और अनागत की योजना बनाई जा सकती है, किंतु वर्तमान मे अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *जो समय बीत गया, वह वापस नहीं आता। इसलिए उसे पीछे से नहीं, आगे से पकड़ने का प्रयत्न करना चाहिए तथा उसका सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

वृहद सास-बहू सम्मेलन

साहुकारपेट।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में वृहद सास-बहू सम्मेलन का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री अणिमाश्री जी ने कहा कि सास-बहू का यह एक अहम रिश्ता है। इस रिश्ते को सलोना बनाना है तो हमें कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए ईंट-चुने से मकान बनता है, लेकिन वह घर तब बनता है जब कोई वहाँ रहता है, वही घर मंदिर तब बनता है जब रिश्तों में मिठास होती है और आपसी रिश्ते दिल से निभाते हैं। एक-दूसरे को सहन करना सीखें गुणवत्ता का प्रमोद भाव के साथ गुणगान करें। जब भी कोई अच्छी बात हो तो मोटिवेशन दें। इस तरह के सम्मेलन यदा-कदा आयोजित होते रहने चाहिए।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि सास-बहू का रिश्ता घर का प्रमुख रिश्ता है, जिस रफ्तार के साथ हमारी जिंदगी चल रही है, रिश्ते निभाने रफ एंड टफ हो गए हैं। जो संस्कृति के साथ जीता है वह आनंद के साथ जीता है। बहू यह संकल्प करें मैं अपने स्वभाव को बदलूँ स्वयं बदले दूसरों को बदलने का प्रयास ना करें। सासू माँ आपको वात्सल्य देना चाहती है अगर नहीं भी मिले तो अपनी सोच अच्छी रखें। जीवन को आनंदमय एवं शानदार बनाने का प्रयास करें।

साध्वी सुधाप्रभा जी ने सास-बहू की जोड़ियों को प्रश्न पूछकर सभी का ज्ञानवर्धन किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजकुमारी दुगड़ ने कहा कि सास-बहू में माँ-बेटी का प्यार होना चाहिए। माँ-बाप को दखल नहीं देना चाहिए। सास-बहू कार्यक्रम में मंगलाचरण रेखा बाफना ने किया। तत्पश्चात स्वागत स्वर अध्यक्ष पुष्पा हिरण द्वारा हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी द्वारा रचित गीतिका का संगान रेखा पींचा एवं रिंकू ओस्तवाल ने किया।

सास-बहू के रिश्ते को दर्शाते हुए एक लघु नाटिका की प्रस्तुति महिला मंडल की बहनों द्वारा दी गई। इस नाटक का लेखन लता पारख ने किया। सास भी कभी बहू थी गीत पर महिला मंडल की बहनों ने प्रस्तुति दी। मुख्य वक्ता राजकुमारी दुगड़, कार्यक्रम संयोजिका लता पारख एवं लता नाहर का सम्मान महिला मंडल द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। कार्यक्रम में सराहनीय उपस्थिति रही। पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ता बहनों का विशेष सहयोग रहा। सास-बहू की जोड़ियों के लिए मनोरंजन गेम भी रखा गया। सास-बहू की जोड़ियों में से दो जोड़ियों को बेस्ट जोड़ी अवार्ड दिया गया।

मोक्ष की सीढ़ी कार्यक्रम

विजयनगरम्

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मुनि कुमुद कुमार जी, मुनि विमलेश कुमार जी के निर्देशन में तेमम के तत्त्वावधान में 'मोक्ष की सीढ़ी' चंडकौशिक का डंक' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा मोक्ष पहुँचने के लिए जीवन में साधना की अपेक्षा होती है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी साधु की तरह जीवन जी सकते हैं।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों की प्राचीन संस्कृति रही है। आगम में श्रावक जीवन साधु जीवन की आचार संहिता, साधना, कर्म मुक्ति का तीर्थंकरों ने उपदेश दिया है। मोक्ष जाने के लिए पुरुषार्थ एवं भाग्य दोनों अपेक्षित होते हैं। आत्मसाधना करने वाला अपने कर्मों का क्षय करता है। कर्म क्षय होने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। मुनि कुमुद कुमार जी ने श्रावकों का ज्ञान बढ़े इसी दृष्टि से यह कार्यक्रम आयोजित किया।

मुनि कुमुद कुमार जी के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम पाँच राउंड में चला, जिसमें भगवान ऋषभ, भगवान महावीर जैन धर्म एवं सामान्य ज्ञान का उपक्रम चला। सामायिक, स्वाध्याय, वाणी संयम, जप, ध्यान पर अपने विचारों की प्रस्तुति देने के साथ प्रेरणादायक गीत का संगान किया। सिद्ध ग्रुप, आचार्य ग्रुप, मुनि ग्रुप ने मोक्ष को प्राप्त किया। जैन इतिहास जैन दर्शन में वर्णित जीवन के मूल्यपरक मापदंडों को जानने का यह उपक्रम बहुत रोचक रहा। प्रतिभागियों से विविध रूप से जानकारी प्राप्त की गई। संपूर्ण परिषद से भी जैन इतिहास, तत्त्व एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी प्राप्त की गई।

मुनि कुमद कुमार जी एवं तेयुप सहमंत्री तरुण हीरावत ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। नीतू एस० दुगड़ ने कार्यक्रम की उपयोगिता को उजागर किया। स्कोर बोर्ड की भूमिका का निर्वाहन करते हुए अंशुल बोकड़िया ने सभी का मूल्यांकन किया। समय प्रबंधन की भूमिका संजय गांधी ने पूर्ण की। महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। आभार ज्ञापन हर्षा नाहटा ने किया।

नववधू सम्मेलन

बालोतरा।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में नववधू सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि साध्वीश्री जी ने नववधूओं को एक प्रेरणादायक रोचक कहानी के माध्यम से प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। इस कार्यक्रम में लगभग ६० बहनें उपस्थित रहीं। साध्वीश्री जी के द्वारा एक रोचक व ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी बहनों को १४ नियम के कार्ड दिए गए। लगभग ६० नववधू १६ दिन तक लगातार एकाशन का तप करती हैं, सभी बहनों को साध्वीश्री जी ने भ्रूणहत्या न करने का संकल्प करवाया।

इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, कन्या मंडल प्रभारी, श्वेता सालेचा, कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वेद मेहता, पूर्व संयोजिका विधि भंसाली, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, कमला देवी ओस्तवाल उपस्थित थे।

तत्त्वविज्ञ परीक्षा का आयोजन

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार एवं चेन्नई तेमम के तत्त्वावधान में साहुकारपेट, तेरापंथ सभा भवन में तत्त्वविज्ञ परीक्षा का आयोजन हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी द्वारा प्रदत्त मंगलपाठ का श्रवण के बाद परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। महिला मंडल द्वारा साध्वीश्री जी को परीक्षा संबंधी जानकारी निवेदित की गई। तत्पश्चात निर्धारित समय पर परीक्षा का आयोजन हुआ। जिसमें ८ परीक्षार्थियों ने चेन्नई में एवं एक परीक्षार्थी ने भीलवाड़ा में गुरुदेव की सन्निधि में परीक्षा दी। सभी परीक्षार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ परीक्षा दी।

स्वागत वक्तव्य अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने एवं धन्यवाद मंत्री रीमा सिंघवी ने दिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला एवं अनिता चोपड़ा के साथ दीपाली सेठिया, हेमलता नाहर एवं लता पारख उपस्थित थे। संयोजिका प्रीति डूंगरवाल, कनक पुगलिया के परिश्रम से परीक्षा सानंद परिसंपन्न हुई।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

पटना।

तेमम द्वारा वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक राजेंद्र मोदी की उपस्थिति में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। राष्ट्रीय गान का संगान किया गया। मंगलाचरण जयश्री पगारिया ने किया। तेरापंथ सभा, पटना के अध्यक्ष विजय कुमार बोथरा ने राजेंद्र मोदी का स्वागत किया।

वरिष्ठ श्रावक तनसुख बैद ने प्रेक्षाध्यान के महत्त्व के बारे में बताया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा बैद ने सभी का स्वागत किया व शिविर में भाग लेने का निवेदन किया। राजेंद्र मोदी ने प्रेक्षाध्यान के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी व प्रयोग करने की प्रेरणा दी। धन्यवाद ज्ञापन खुशबू भूतोड़िया ने किया।

सास-बहू सम्मेलन

मैसूर।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में आयोजित सास-बहू सम्मेलन के अंतर्गत 'समन्वय' कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि सास-बहू का रिश्ता परिवार में महत्त्वपूर्ण होता है। आमतौर पर कहा जाता है बहू को बेटी मानें, पर हमारा मानना है—बहू को बहू का अधिकार मिलना चाहिए। एक-दूसरे को आदर देना सीखें। परिवार आग्रह से नहीं आदर से चलता है। बहू का ऐसा सात्त्विक व्यवहार होना चाहिए जिससे बेटी को भूल जाए। सासू का इतना वात्सल्य मिले बहू पीहर के नंबर भूल जाए। उन्होंने कहा कि कोरा सम्मेलन पर्याप्त नहीं, समन्वय के दृष्टिकोण का विकास हो। और सास-बहू मिलकर आदर्श बनकर घर-आँगन में स्वस्थ वातावरण बनाए रखें।

महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वीवृंद ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि सास-बहू एक-दूसरे के साथ सखी भाव से रहें। मंडल के अध्यक्ष मंजु दक ने सबका स्वागत किया। मुख्य अतिथि की भूमिका स्मिता पगारिया एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में महादानी श्राविका भीखी देवी सेठिया एवं उमराव सेठिया ने मंच को सुशोभित किया।

मुख्य अतिथि ने अपना वक्तव्य दिया। इस अवसर पर कन्या मंडल, महिला मंडल ने लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। अध्यक्ष मंजु दक ने अतिथियों का सम्मान किया। महिला मंडल द्वारा प्रतिभागी जोड़ों के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निर्णायक प्रियंका दक और संतोष कोठारी बने। विजेता को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसमें प्रथम जोड़ी मीनाक्षी कोठारी, सोनल कोठारी को, द्वितीय पारस दक, मीनल दक जोड़ी को, तृतीय विजयलक्ष्मी आच्छा, मीनल आच्छा की जोड़ी रहे। संचालन पारस और मीनल दक ने किया। मंडल की मंत्री वनिता बाफना ने आभार व्यक्त किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2019-21

✲ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✲ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✲ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✲ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✲ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✲ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✲ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✲ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✲ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

तपस्या अनुमोदना व अभिनंदन कार्यक्रम

जयपुर-शहर।

तेमम द्वारा मुनि सुमति कुमार जी व मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में तप अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। निर्मला जूनीवाल के सिद्धि तप, रेखा लोढ़ा के मासखमण के प्रत्याख्यान कराए गए। सभी ने तपस्या का अभिनंदन व अनुमोदना की। तेमम की अध्यक्ष निर्मला सुराणा, अभातेमम की ट्रस्टी सौभाग देवी बैद ने साहित्य व स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया। तेमम शहर द्वारा तपस्वी बहनों के अभिनंदन में सुंदर मंगल गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम स्थल पर सभा अध्यक्ष नरेश मेहता, पूर्व अध्यक्ष राजकुमार बरड़िया व महिला मंडल सदस्य उपस्थित रहे।

उपशम कषाय व पापभीरू शासनश्री साध्वी मूलांजी

❑ साध्वी मंगलयशा ❑

गुजरात के उत्तर पश्चिम सीमांत कच्छ जिले के फतेहगढ़ गाँव के मूल निवासी साध्वी मूलांजी का जन्म वि०सं० १९८७, वैशाख शुक्ला द्वादशी को हुआ। धर्मनिष्ठ श्रावक न्यालचंद भाई संघवी की छह संतानों में आप सबसे छोटी थीं। उस समय के रिवाज के अनुसार आपकी सगाई इस गाँव के सेठ परिवार में कर दी गई थी। साध्वी भत्तुजी, मुनि रावतमल जी स्वामी एवं साध्वी छगनांजी (सरदारशहर) के लगातार तीन चातुर्मास फतेहगढ़ को प्राप्त हुए, आपको उन सबकी सन्निधि का विशेष लाभ मिला और आपके भीतर वैराग्यांकुर पैदा हुए। वि०सं० २००४ में बीदासर महोत्सव पर आपने गुरुदेव तुलसी के दर्शन कर दीक्षा की प्रार्थना की। उस समय उपस्थित मंत्री मुनि मगनलाल जी ने गुरुदेव को बताया कि गुजरात के लोग बहुत कोमल होते हैं। वे राजस्थान की सर्दी-गर्मी सहन नहीं कर सकते अतः यह दीक्षा नहीं हो सकती। आपके तीव्र वैराग्य को देखते हुए परिवारजनों ने वि०सं० २००५ के छापर चातुर्मास में पुनः पूज्य गुरुदेव के दर्शन करवाए। गुरुदेव ने देखा कि उस समय के यातायात के मर्यादित साधनों के बावजूद यह बहन इतनी लंबी दूरी पार करके दोबारा आकर अर्ज कर रही है। तुरंत गुरुदेव ने स्वयं आपसे बात करके सर्दी-गर्मी के परिषहों के बारे में परीक्षा ली इस परीक्षा में खरे उतरने पर गुरुदेव ने मगनलाल जी स्वामी को कहा यह बहन ११०० किमी० की दूरी से दोबारा आई है। बहन की भावना मजबूत है। पास में बैठे शुभकरण जी दस्सानी ने कहा—गुरुदेव! छगनांजी के चातुर्मास में फतेहगढ़ जाकर आया हूँ। इस बहन का वैराग्य और त्याग-प्रत्याख्यान देखकर मैं चाहती हूँ आप नए प्रदेश और गुजरात प्रांत के भाई-बहनों की कोमलता पर तथा स्वयं बहन की शारीरिक कोमलता पर लक्ष्य न दें और बहन के मजीठी वैराग्य के साथ न्यास कराएँ। इस बहन की दीक्षा की मैं जिम्मेदारी लेता हूँ। दस्सानी जी की धर्म दलाली और बहन की मजबूती ने और गुरुदेव के बदले चिंतन ने चारित्र मोह कर्म के क्षयोपशम को प्रबल बना दिया। गुरुदेव ने तुरंत साधु प्रतिक्रमण तथा पुनः एक बार दर्शन किए तब दीक्षा का आदेश प्रदान किया।

दीक्षा का विरोध

दीक्षा निर्णित होने पर ससुराल पक्ष से बात की। वे छः कोटि स्थानकवासी संप्रदाय के थे। दीक्षा के नाम से ही खफा हो गए। बोले दीक्षा देने का इतना ही शौक जगा है तो आपके घर में चार बहुएँ हैं उनको दे दो। हमारी बहू को हम दीक्षा नहीं देने देंगे। उनके ससुराल पक्ष वाले पीछे-पीछे छापर तक आए, लक्ष्य था अपनी बहू को उठाकर ले आएँगे। वे छापर पहुँचे, दीक्षा के दिन भव्य पंडाल में आचार्य तुलसी के तेज को देखकर के डर गए। बोले कि यहाँ हमारा काम नहीं है। दीक्षा सानंद संपन्न हो गई। उन्होंने कच्छ जाकर यह बात फैला दी कि ये भूखे संघवी अपनी बेटी को राजस्थान में बेचकर चाँदी के रुपयों से बोरा भरकर लाए हैं।

अद्वितीय अद्भुत दीक्षा

शासनश्री साध्वी मूलांजी के दीक्षा का प्रसंग अपने आपमें द्वितीय है, अद्भुत है। तेरापंथ के इतिहास में इस प्रकार से दीक्षा कभी नहीं हुई है। आज से ७४ वर्ष पूर्व उस समय यातायात के साधनों के अभाव में पारिवारिकजन दीक्षा प्रदान करने जिस तरह अपने गाँव फतेहगढ़ से छापर पहुँचे वह रोचक घटना है।

परिवार से लगभग ५० लोग दीक्षार्थिनी बहन को लेकर फतेहगढ़ से भचाऊ गाँव तक बैलगाड़ी से, भचाऊ से कांडला पोर्ट ट्रेन से, कांडला पोर्ट से नवलखा बंदर पानी के जहाज से, नवलखा बंदर से मोरबी ट्रक से, मोरबी से भीलड़ी से जोधपुर एवं जोधपुर से छापर तक ट्रेन से पहुँचे। इस तरह फतेहगढ़ से छापर (राजस्थान) तक पहुँचने में बैलगाड़ी, ट्रक, ट्रेन और पानी के जहाज का प्रयोग कर पहुँचा अपने आपमें विरल, अद्वितीय घटना है। छापर तक पहुँचने में ६-७ दिन का समय लगा था।

पारिवारिक दीक्षाएँ

आपके संसारपक्षीय संघवी परिवार से ७ आत्माएँ संघ में साधनारत हैं।

(१) मुनि अनंत कुमार जी
(२) साध्वी मंगलयशा जी
(३) साध्वी मुक्तिश्री जी
(४) साध्वी मल्लिका जी
(५) साध्वी गौरवयशा जी
(६) साध्वी नवीनप्रभा जी
(७) समणी रुचिप्रज्ञा जी

संयम जीवन में

गुजरात प्रदेश की प्रथम साध्वी दीक्षित होने से आचार्यश्री तुलसी ने आपका नाम मूलांजी रखा। दीक्षा के बाद मूलांजी को नए देश की साध्वी होने के कारण गुरुदेव उनको 'कच्छी' कहते हुए पूछवाते कि खाना भाता है या नहीं, रात को नींद आती है या नहीं। गुरुदेव की आत्मीयता प्राप्त कर मूलांजी भी प्रसन्न थी। दीक्षा के बाद आपको साध्वी छगनांजी (बोरावड़) को सौंपा। आप पूर्ण समर्पण भाव से एक ही सिंघाड़े में पहले छगनांजी और बाद में शासनश्री पानकंवर जी 'द्वितीय' के साथ आजीवन ७३ वर्ष रही। सबकी चहेती बनकर रही।

अनुत्तर आत्मीयता

साध्वी मूलांजी और शासनश्री पानकंवर जी 'द्वितीय' का संबंध मानो दो शरीर एक आत्मा की तरह था। आप दोनों ७३ वर्षों तक साथ रहे। हजारों गाथाओं का प्रतिदिन सह स्वाध्याय करते। कुछ समय पूर्व आप बोले कि "हम दोनों नब्बे पार हैं। अब तो इच्छा है कि एक साथ में संथारा आए और एक साथ ही देवलोक हो जाएँ। दोनों को परस्पर विरह न देखना पड़े।" खैर! नियति को कुछ और ही मंजूर था।

परस्पर साथ रहने के लिए साध्वी मूलांजी ने अग्रगण्य बनकर अलग विचरने की बात को भी अनासक्त भाव से मना कर दिया था।

मेरा परम सौभाग्य

मैं अपने आपको परम भाग्यशालिनी मानती हूँ कि मुझे दीक्षा के बाद शासनश्री पानकंवर जी के ग्रुप में मेरी संसारपक्षीय बुआ महाराज साध्वी मूलांजी के सान्निध्य में रहने का सुअवसर मिला।

३६ वर्षों में मैंने अनुभव किया कि जैसा बाहरी रूप सुंदर था वैसे ही साध्वी मूलांजी भीतर से उपशम कषाय व पापभीरू थे। स्वयं के स्वीकृत नियमों के प्रति सतत् जागरूक थे। प्रतिदिन हजारों गाथाओं का स्वाध्याय कर लेते थे। अंतिम १० वर्षों से आप लूणकरणसर में प्रवासित थी। आप अस्वस्थ चल रहे थे फिर भी हर स्थिति में आपके भीतर जो समता भाव था वह हमारे लिए अनुकरणीय है। मुझे विशेष रूप से आपकी अंतरंग सेवा का सुअवसर मिला। मैं मानती हूँ कि यद्किंचित् आपके ऋण से उऋण बनी हूँ।

अंत में अपने प्रति यही मंगलकामना करती हूँ कि शासनश्री साध्वी पानकुमारी जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में समाधिस्थ बनकर अपनी आत्मसाधना में आगे बढ़ती रहूँ।

जैन विद्या कार्यशाला का समापन

जीन्द।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में जैन विद्या कार्यशाला का समापन हुआ। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद, जीन्द द्वारा सुंदर तथा ज्ञानवर्धक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला २० दिन लगातार चली। तेरापंथ सभा, जीन्द के कोषाध्यक्ष कृष्ण जैन को सौ प्रतिशत हाजिरी होने पर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्रीचंद जैन, राजेश जैन, नरेश जैन, डॉ० सुरेश जैन, खजांचीलाल जैन आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए। मंच का संचालन कुणाल मित्तल ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन ऑफिस शुभारंभ

कांकरोली।

स्थानकवासी समाज के सुरेश मंजू देवी सौरभ, प्रियेश, नेहल लोढ़ा निवासी नाथद्वारा के नूतन ऑफिस का शुभारंभ संस्कारक विनोद बडाला व सूरत रातड़िया ने जैन संस्कार विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न कराया।

संस्कारक सूरज जैन ने आभार ज्ञापित किया। संस्कारक विनोद बड़ाला व सूरज जैन द्वारा लोढ़ा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

साउथ कोलकाता।

बेकरी एवं कॉफी शॉप आउटलेट का पूजन जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं मंगलपाठ के संगान के साथ हुआ। अभातेयुप के संस्कारक महेंद्र दुगड़ एवं प्रदीप सिंघी ने पूजन कार्यक्रम संचालित किया।

परिषद के प्रतिनिधित्व अध्यक्ष अमित पुगलिया, सचिव रोहित दुगड़ एवं कोषाध्यक्ष आनंद बरड़िया ने किया। इस कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति मनोज दुगड़ एवं प्रवीण सिरोहिया की रही।

नूतन गृह प्रवेश

पूर्वांचल-कोलकाता।

बीकानेर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी राजेंद्र कुमार पारख के पुत्र चंद्रेश कुमार पारख का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से अभातेयुप संस्कारक रवि छाजेड़ ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा संपादित करवाया। जै संस्कार विधि के संयोजक राकेश चोरड़िया ने मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

पूर्वांचल-कोलकाता।

सुभाष दुगड़ की नई दुकान का शुभारंभ जैन विधि से किया गया। संस्कारक की भूमिका अभातेयुप संस्कारक विजय कुमार बरमेचा ने निभाई।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष एवं जैन संस्कार विधि के प्रभारी धर्मेन्द्र बुच्चा, संयोजक हर्ष खटेड़ एवं पारिवारिक सदस्य उपस्थित थे। सुभाष दुगड़ ने संस्कारक एवं परिषद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

विवाह संस्कार

बारडोली।

भोपाल सिंह सांखला (कामरेज निवासी) के सुपुत्र राकेश कुमार एवं महुआ शुगर निवासी मदनलाल हिरण की सुपुत्री समता कुमारी का विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा किया गया। संस्कारक के रूप में उधना से अर्जुनलाल मेडतवाल एवं अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता उपस्थित थे।

दोनों पक्ष स्थानकवासी संप्रदाय से समागत थे। तेयुप, बारडोली के अध्यक्ष साहिल बाफना एवं मंत्री रौनक सरणोत ने नव दंपति के सुखी दाम्पत्य जीवन हेतु आध्यात्मिक मंगलकामना प्रेषित की।

नूतन गृह प्रवेश

जयपुर।

अलका-राहुल चोरड़िया के नूतन आवास जैन संस्कार विधि से प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोच्चार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष आनंद दुगड़, मंत्री आदित्य दुगड़ ने परिषद परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया। इस अवसर पर उपस्थित जनमानस व पारिवारिक जनों ने तन्मयता से भाग लिया।

प्रतिष्ठान उद्घाटन

झवेरी बाजार।

अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष व प्रवक्ता उपासक डालचंद कोठारी व अणुविभा के संगठन मंत्री विनोद कोठारी के झवेरी बाजार स्थित नए प्रतिष्ठान का उद्घाटन वरिष्ठ संस्कारक सोहनलाल सिंघवी, चेंबूर ने पूरे विधि-विधान से संपन्न करवाया। इस कार्यक्रम में परिवार व समाज के वरिष्ठ व्यक्तियों ने उपस्थित रहकर प्रतिष्ठान की सफलता हेतु मंगलकामना की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 सितंबर, 2021

✦ *व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो और व्यवस्था भी अनुकूल हो तो दोनों के योग से 'नैतिकता की सरिता, महक उठे मानवता' की बात उजागर हो सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तप अभिनंदन के आयोजन

मासखमण तप अभिनंदन

गंगाशहर।

शांति निकेतन सेवा केंद्र में तेरापंथी सभा द्वारा मासखमण तप करने वाली तपस्विनी बहन भारती दफ्तरी का तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि तप एक मंगल है, तपस्या करने वाले भाई-बहन के भाव, भाषा और मन की शुद्धि होने से वह मंगलमय बन जाता है। साध्वीश्री जी ने कहा कि दफ्तरी परिवार व पुगलिया परिवार दोनों ही संघ व संघपति के प्रति समर्पित परिवार है। साध्वी रम्यप्रभा जी ने मासखमण तप का महत्त्व बताया।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी से प्राप्त संदेश का वाचन किया गया। ललिता दफ्तरी ने तपस्विनी के बारे में उद्‌गार व्यक्त किए। तपस्विनी बहन के पारिवारिक जनों में से भीखमचंद पुगलिया, सुशील बैद, सुषमा देवी ने अपने विचार व्यक्त किए। तेममं की अध्यक्षा ममता रांका, तेयुप के मंत्री देवेंद्र डागा, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी तथा आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महावीर रांका ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए तपस्विनी का अभिनंदन किया। सेवा केंद्र में विराजित साध्वियों तथा तपस्विनी के पीहर पक्ष पुगलिया परिवार की तरफ से सामुहिक गीतिका का संगान किया गया। तपस्विनी भारती दफ्तरी का महिला मंडल अध्यक्ष ममता रांका व मंत्री कविता चोपड़ा ने पताका व माल्यार्पण करके, तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ व मंत्री देवेंद्र डागा ने साहित्य भेंट कर तथा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी व उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा तथा सहमंत्री पवन छाजेड़ ने अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मान किया।

इस अवसर पर संपत देवी भंसाली तथा मुस्कान बोथरा ने १३ की तपस्या का प्रत्याख्यान साध्वीश्रीजी द्वारा करवाया गया। तपस्विनी की तरफ से कन्या मंडल की पूर्व संयोजिका गरिमा सेठिया ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। इस अवसर पर साध्वी पावनप्रभा जी की प्रेरणा से तपस्विनी के पारिवारिकजनों ने ६ तेले करने का संकल्प लेकर तप द्वारा तप अभिनंदन करने का उदाहरण प्रस्तुत किया।

मासखमण तप अभिनंदन

हैदराबाद।

तप अभिनंदन समारोह में मासखमण तपस्वी कमल सिंह बैद अतापुर निवासी (सुपुत्र स्वर्गीय भीकमचंद बैद) के तप को संबोधित करते हुए साध्वी निर्माणश्री जी ने कहा कि तप आत्मशुद्धि का महान मार्ग है। जैन धर्म में तप के विविध प्रकार बताए गए हैं। उन्होंने इस तप के साथ मौन साधना को जोड़कर इसे और अधिक विशिष्ट बना दिया।

साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि कमलजी साध्वीश्री जी की प्रेरणा से पिछले कई वर्षों से तप करते रहे हैं। इस वर्ष वृहद हैदराबाद में तप की पंक्ति में उनका नाम प्रथम है। साध्वी लावण्यप्रभा जी आदि साध्वियों ने समवेत स्वर में अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी कुंदनयशा जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के द्वारा अभिनंदन पत्र पदाधिकारियों के द्वारा भेंट किया गया। सभा अध्यक्ष सुरेश सुराणा, मंत्री सुशील संचेती ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। अभिनंदन पत्र का वाचन प्रमोद भंडारी ने किया। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन संयोजक प्रेम बैंगाणी ने किया। शहर की अन्य संस्थाएँ महिला मंडल की अध्यक्ष अनिता गीड़िया, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, टीपीएफ सहमंत्री धीरज ललवानी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने उनके मनोबल की सराहना की। बैद परिवार की ओर से बहनों ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। कविता के माध्यम से नन्हे-मुन्ने बालक-बालिकाओं ने प्रस्तुति दी। हैदराबाद महिला मंडल की ओर से सामुहिक गीत के द्वारा उनकी वर्धापना की। ३१ दिन की तपस्या के उपलक्ष्य में ३१ भाई-बहनों ने तप का संकल्प कर उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर उपस्थित अठाई तप करने वाले अमित गोलछा सुपुत्र प्रकाश रंजू गोलछा का साहित्य दुपट्टे से रश्मि सेठिया ने सम्मान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के उच्चारण से किया गया।

चार मासखमण तप अभिनंदन

विजयनगरम्।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मासखमण करने वाली नीलम चोपड़ा, सरिता चोपड़ा, अनिता बोथरा एवं अंजू घोड़ावत का तपाभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा—तपस्या में शरीरबल तो चाहिए ही लेकिन उससे भी ज्यादा मनोबल, आत्मबल की अपेक्षा होती है। जैन धर्म तेरापंथ धर्मसंघ में तपस्या के कई कीर्तिमान बने हुए हैं। विभिन्न प्रकार की तपस्या कर हजारों साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं ने साधना का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि तपस्या का अवसर जीवन में कभी-कभी आता है। खाने की लालसा कभी खत्म नहीं होती है। जीभ को कंट्रोल रखना मुश्किल होता है। तपस्या करने वाले धन्य हैं। वे कितनी-कितनी अपनी कर्म निर्जरा करते हैं। तपस्या करने वाले भौतिक कामना न रखें। उसमें सकाम निर्जरा नहीं होती है। मुनि ज्ञानेंद्र जी स्वयं तपस्या करते हैं। उनकी तपस्या का अपना प्रभाव है। तपस्या की जितनी अनुमोदना की जाए वह कम है। परिवार का सहयोग मिलने से तपस्वी की तपस्या अच्छे से पूर्ण हो जाती है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति तप-त्याग की संस्कृति रही है। यहाँ त्यागी का सम्मान-अभिनंदन होता है। मुनि विमलेश कुमार जी ने कहा कि तपस्या की अनुमोदना में त्याग की भेंट अवश्य देनी चाहिए।

नेहा बैद एवं भावना डागा के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभाध्यक्ष प्रवीण आंचलिया, तेयुप मंत्री निर्मल बांठिया ने संस्था की तरफ से मंगलकामना की। महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने गीत के द्वारा अनुमोदना की। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के संदेश का वाचन नम्रता दुगड़ ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन सभा मंत्री संजीव सामसुखा ने किया। सपना चोपड़ा, कटक से प्रियंका सेठिया, तपस्वी बहन सरिता चोपड़ा, लक्षिता घोड़ावत, मनीषा गीड़िया, आरती चोपड़ा, संजना चोपड़ा, मूलचंद छाजेड़, आरजू बोथरा, सुनीता बैद, कवि हनुमानमल जी ने विचारों से तपस्वी बहनों के प्रति मंगलभावना प्रकट की। विशाखापट्टनम महिला मंडल, घोड़ावत परिवार, विशाखापट्टनम से संदीप डागा ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा-विजयनगरम, तेरापंथ सभा-विशाखापट्टनम, तेयुप, तेममं-विशाखापट्टनम ने तपस्वी बहनों का अभिनंदन किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री संजीव सामसुखा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि विमलेश कुमार जी ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन

गदग।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में ममता गौतम पालरेचा की मासखमण तपस्या का अभिनंदन समारोह मनाया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। ममता ने दूसरा मासखमण कर अपनी वीरता का परिचय दिया है। विमलाबाई और रूपचंद को अपनी पुत्रवधू की बहुत खुशी है।

डॉ० साध्वी गवेषण जी ने कहा कि तप से मन का मैल दूर होता है। जीवन उज्ज्वल एवं पवित्र बनता है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि मनुस्मृति का वाक्य है, जो चीज दुस्तर है, दुष्प्राप्य है कठिनता से मिलने वाली है वह वस्तु भी तपस्या से प्राप्त हो जाती है। तपस्या से कर्मों का निर्जरण होता है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने उद्‌गार व्यक्त किए। सुमधुर गीतिका का संगान किया। साध्वी दक्षप्रभा जी के स्वरों के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

कर्नाटक राज्य अंगूर निगम के अध्यक्ष कांतिलाल भसाली, सभा के अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, तेयुप के अध्यक्ष दिनेश सकलेचा, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेमलता बाई कोठारी, तेयुप के मंत्री कमलेश जीरावला, यूकेटीएस के सहमंत्री राजेंद्र कोचर, पूर्व अध्यक्ष सुरेश कोठारी, स्थानकवासी सभा के अध्यक्ष रूपचंद पालरेचा ने तपस्वी बहन की अनुमोदना में विचार व्यक्त किए। साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन जितेंद्र संकलेचा, अभिनंदन पत्र का वाचन दीपचंद भंसाली, साध्वी शिवमाला जी के संदेश का वाचन जितेंद्र जीरावला, उत्तर कर्नाटक के अध्यक्ष जयंतीलाल के संदेश का वाचन प्यारेलाल बोहरा ने किया। कई गणमान्यजनों ने तपस्या की अनुमोदना में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

तपस्या का अभिनंदन तपस्या के द्वारा खुशी एवं पिंकी पालरेचा ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० साध्वी गवेषणा ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन

गांधीनगर-बैंगलोर।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा द्वारा आयंबिल मासखमण के प्रत्याख्यान करने वाले तपस्वियों का सभा द्वारा अभिनंदन पत्र देकर तप अनुमोदना की। साध्वीश्री ने कहा कि तप जैन धर्म की एक विशेष पहचान है, जिन्होंने भी तप की गंगा में अभिस्नात किया, उन्होंने अपने दृढ़ मनोबल का परिचय दिया।

साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी का भी अच्छा श्रम रहा। साध्वीश्री जी ने गीतिका का संगान किया। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा आयंबिल मासखमण करने वाले महावीर मूथा, नीतू भंसाली व रेखा खटेड़ के मासखमण पर संदेश प्रदान करवाया। जिसका वाचन सभा मंत्री नवनीत मूथा ने किया।

अध्यक्ष सुरेश दक ने तपस्या की अनुमोदना की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दर्शितप्रभा जी ने किया। तेयुप प्रज्ञा संगीत सुधा व शांतिनगर की बहनों ने भी अनुमोदना गीत मुखरित किया।

मासखमण तप अभिनंदन

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता व पूर्वांचल स्वर लहरी स्वयं को सौभाग्यशाली मानती है कि उन्हें पूर्वांचल निवासी कांता देवी एवं अनूपचंद खटेड़ की पुत्रवधू एवं अरिहंत खटेड़ की धर्मपत्नी मोनिका खटेड़ जिनके मासखमण की तपस्या है, उनके अनुमोदना में भजन का कार्यक्रम सुअवसर मिला।

तेयुप, पूर्वांचल के अध्यक्ष विकास सिंघी, मंत्री धीरज मालू, सहमंत्री राजीव खटेड़, कार्यसमिति सदस्य रवि दुगड़, पूर्वांचल स्वर लहरी के संयोजक आशीष लिंगा ने मिलकर संयुक्त रूप से एक गीतिका गाकर तप की अनुमोदना की। मोनिका खटेड़ का मान व मनोबल बढ़ाया। पूर्वांचल सभा की ओर से सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, महिला मंडल की ओर से मंत्री बिंदु बोथरा, मधु डागा, सरला गंग एवं कन्या मंडल की ओर से गीतिका द्वारा तप की अनुमोदना की गई।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने तपस्वी की तपस्या के लिए साधुवाद एवं आशीर्वाद प्रदान किया तथा अन्य सहवर्तिनी साध्वीवृंद ने भी एक गीतिका के माध्यम से तप की अनुमोदना की। कार्यक्रम के समापन में तेयुप के अध्यक्ष विकास सिंघी ने तपस्वी बहन को स्मृति मोमेंटो प्रदान कर पधारे हुए सभी गणमान्य लोगों का आभार प्रकट किया।

पौधारोपण कार्यक्रम

जीन्द।

टीपीएफ द्वारा एस०पी० मेमोरियल स्कूल में पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ० सुरेश जैन, डॉ० अनिल जैन ने बताया कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए पौधारोपण एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। पौधों से हमें स्वच्छ हवा मिलती है। इस अवसर पर टीपीएफ, जीन्द अध्यक्ष बी०एस० गर्ग, मंत्री आशु जैन, कोषाध्यक्ष सचिन जैन, राजेश जैन, डॉ० अरविंद गोयल उपस्थित रहे।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

संस्कारों का सशक्त माध्यम - ज्ञानशाला

विजयनगरम्।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी व मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव का आयोजन हुआ। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि संस्कारों का सशक्त माध्यम है–ज्ञानशाला। ज्ञानशाला के माध्यम से ज्ञान का आदान-प्रदान होता है। ज्ञान हमारे भीतर की चेतना को जागृत करता है। ज्ञान के बिना विवेक का जागरण नहीं होता है। वार्षिकोत्सव के माध्यम से सबको बताया गया कि क्या सीखा, क्या प्राप्त किया। प्रशिक्षक एवं बच्चे दोनों की ज्ञान की आराधना हो जाती है।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला हमारे जीवन की प्राथमिक अपेक्षा होती है। ज्ञानशाला में प्राप्त संस्कार जीवन की बुनियाद को सम्यक् बनाते हैं। आज के युग में बौद्धिक ज्ञान का विकास तो बहुत हुआ, लेकिन संस्कारों का विकास कम होता जा रहा है। बच्चे परिवार, समाज एवं देश का भविष्य होते हैं। भविष्य को शुभ बनाने के लिए प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, संस्कार को जीवंत रखना जरूरी है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला संस्कारों की शाला है। जो संस्कार बचपन में आते हैं वह ताउम्र काम आते हैं। जितना महत्त्व जीवन में श्वास का होता है उतना ही महत्त्व संस्कार का होता है।

ज्ञानार्थी के अर्हम गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। ज्ञानशाला प्रशिक्षक बहनों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। स्थानीय संयोजक अंजू चोपड़ा ने स्वागत भाषण दिया। हमारी ज्ञानशाला वंडरफुल की रोचक प्रस्तुति नन्हे-मुन्ने ज्ञानार्थियों ने दी। ज्ञानशाला के बच्चों के मन के भावों का कन्या मंडल ने गीत के द्वारा अभिव्यक्ति दी। सभाध्यक्ष प्रवीण आंचलिया, सह-आंचलिक संयोजक सुनील बोरड़, महिला मंडल अध्यक्षा रीटा आंचलिया, तेयुप अध्यक्ष राकेश सेठिया ने विचार व्यक्त किए। चौदह स्वप्नों की रंगारंग प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया। अनकापल्ली से समागत शिल्पा बाफना ने भावाभिव्यक्ति दी।

विजयनगरम् ज्ञानशाला से जुड़े दुबई से आर०वी० सेठिया, कतर से मान्या भंसाली, सरदारशहर से कनिक और प्रियांशी दुगड़, प्रशिक्षक प्रेमलता आंचलिया ने लाइव प्रस्तुतियाँ देकर बताया। ज्ञानशाला हमारे जीवन के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका नेहा बैद ने किया। आभार मुख्य प्रशिक्षिका नम्रता दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में उपस्थिति सराहनीय रही। सभी ज्ञानार्थियों को दो साल की परीक्षा के प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार दिए गए। सभा द्वारा ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षक एंव कन्या मंडल का सम्मान किया गया।

संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला है - ज्ञानशाला

बालोतरा।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन द्वारा ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में लगभग ३० प्रशिक्षिकाएँ एवं १२५ बच्चे उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भिक्षु अष्टकम् के संगान से हुआ। साध्वी मंजुयशा जी ने ज्ञानशाला का महत्त्व बताते हुए अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने कहा संस्कार निर्माण का सक्षम उपक्रम है - ज्ञानशाला। जिसका उद्देश्य है हमारी भावी पीढ़ी सुसंस्कारी बने। बच्चों में ज्ञान के साथ विनम्रता, सहनशीलता, शालीनता, व्यवहार-कुशलता, अनुशासन चरित्रवान बनने के संस्कार प्राप्त हों। ज्ञानशाला में बच्चों को भेजने की प्रेरणा दी। एक सुमधुर गीत का संगान कर पूरी परिषद को भाव-विभोर कर दिया।

इस अवसर पर मान्या सालेचा एवं विभा फोला मेहता ने ज्ञानशाला में शुद्ध ज्ञान और नहीं आने पर किस प्रकार अशुद्ध ज्ञान सिखते हैं, इस पर एक परिसंवाद प्रस्तुत किया। ऋदिम एवं आरबी श्रीश्रीमाल ने ए टू जेड तक एक-एक सुंदर शब्दों की प्रस्तुति दी। बच्चों द्वारा एक सामुहिक गीत एवं सुंदर उत्साहवर्धक कव्वाली प्रस्तुत की। प्रशिक्षिका वर्ग द्वारा एक भावभरा गीत प्रस्तुत कर प्रेरणा दी। अर्थ वागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संयोजन साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए, मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

अड़ाजन।

ज्ञानशाला कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। प्रशिक्षकों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। ज्ञानार्थियों के द्वारा ज्ञानशाला गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में मुख्य प्रशिक्षक सुनीता मांडोत, संयोजक सुनील गुगलिया ने स्वागत वक्तव्य देते हुए सभी का स्वागत किया। 'समय को पहचाने' विषय पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा संक्षिप्त एवं रोचक नाटिका प्रस्तुत की गई।

विहार मोदी, प्रीत मोदी व काव्या मोदी द्वारा योगा पर सुंदर प्रस्तुति हुई। ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चे–राही मोदी, जिया मेहता ने अपने विचार रखे। विप्रा संघवी, प्राहि संघवी ने वीडियो के माध्यम से अच्छी प्रस्तुति दी। जिज्ञासा सिंघी ने ज्ञानशाला गीत पर अपनी प्रस्तुति दी। हार्दिक जैन, पूजा चपलोत, सोनू जैन ने ज्ञानशाला के अपने अनुभवों को साझा किया। अड़ाजन ज्ञानशाला के क्षेत्रीय संयोजिका ज्योति मेड़तवाल व सह-संयोजिका अंजु संचेती ने अपना वक्तव्य दिया।

गुजरात अंचल ज्ञानशाला क्षेत्र-बी के क्षेत्रीय सह-संयोजिका व ज्ञानशाला अड़ाजन के प्रशिक्षक वर्षा जैन द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षण दिया जाता है, इसी संदर्भ में प्रशिक्षक ट्रेनिंग ले रहे पिंटू बेन कोठारी ने अपने भाव व्यक्त किए। रुचिका दक ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी व पायल बेन मोदी ने काव्य की प्रस्तुति दी। वर्षा जैन व सोनू जैन द्वारा बच्चों को क्विज भी करवाई गई। ज्ञानशाला द्वारा बच्चों को प्रोत्साहित किया गया।

ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम में सभाध्यक्ष रामलाल कोठारी व सभा के पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संपादित करने में पूरी ज्ञानशाला टीम का अथक श्रम व सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन सहयोगी प्रशिक्षक पायल मोदी व वर्षा जैन ने किया। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला सह-संयोजक महेश पारीख ने किया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

नवसारी।

मुनि आलोक कुमार जी के सान्निध्य में बिलीमोरा में ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। नवसारी ज्ञानशाला के ३० बच्चों ने इसमें भाग लिया और अपनी नाटकीय प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में बिलीमोरा, अमलसाड, डूंगरी, चिखली, नवसारी, वलसाड, अनावल, वासदा एवं आसपास के सभी क्षेत्र के ज्ञानशाला के बच्चों की काफी संख्या में उपस्थिति रही। साथ में आसपास के क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाएँ भी काफी संख्या में उपस्थित हुए।

मुनि आलोक कुमार जी, मुनि हिमकुमार जी एवं मुनि लक्ष्य कुमार जी ने बच्चों में आध्यात्मिक विकास हो, धर्म के प्रति बच्चों की जागरूकता बढ़े इस हेतु ज्ञानशाला में बच्चों को जुड़ने के लिए विशेष रूप से सभी बच्चों को समझाया और कहा कि ज्ञानशाला पूज्य गुरुदेव तुलसी की देन है, हम सब उनके आभारी हैं। सभी क्षेत्रों की ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं को भी साधुवाद दिया।

संस्कारों के दीपों से जीवन को ज्योतिर्मय बनाएँ

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ, चेन्नई द्वारा तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। जिसमें सैकड़ों बच्चों एवं प्रशिक्षिकाओं की सहभागिता रही। साध्वीश्री जी ने कहा कि ज्ञानशाला वो महफिल है, जहाँ बच्चों के अंतर्मन में संस्कारों के दीप प्रज्वलित होते हैं। उन संस्कार रूपी दीपों की ज्योति से बच्चों का पूरा जीवन ज्योतिर्मय बन सकता है। ज्ञानशाला बच्चों के लिए वो दिशासूचक यंत्र है, जो बालकों के स्वर्णिम भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। बालक ज्ञानशाला में सिर्फ ज्ञानार्जन ही नहीं करते, बल्कि संस्कारार्जन भी करते हैं।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि बालक परिवार का स्वर्ग, समाज की शोभा एवं देश का उज्ज्वल भविष्य है। हर बालक में ध्रुव, प्रह्लाद, महावीर, बुद्ध बनने की प्रतिभा छिपी है। जो अभिभावक अपने बच्चों में छिपी प्रतिभा को पहचान लेता है, उनके बच्चे परिवार के लिए कुलदीपक बन जाते हैं। साध्वीश्री जी ने कहा तेरापंथ सभा के संरक्षण में सुरेश बोहरा एवं उनकी सक्षम टीम के नेतृत्व में चेन्नई में ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएँ २४ ज्ञानशालाओं का अच्छा संचालन कर रही हैं।

तेरापंथ सभा मंत्री गजेंद्र खटेड़, आंचलिक संयोजक कमलेश ने विचार व्यक्त किए। प्रशिक्षिका बहनों ने मंगल संगान किया। दिल्ली से समागत सुरेश सोनी, दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु सोनी ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला संयोजक सुरेश बोहरा ने किया। माधावरम ज्ञानशाला ने बारह व्रत, साहुकारपेट ने वंदना का महत्त्व, पल्लावरम ने सामायिक से लाभ, वेपरी, नई धोबी पेट, व्यासरपाडी आदि ज्ञानशालाओं ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम

राजलदेसर।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने ज्ञानशाला दिवस पर भाव व्यक्त करते हुए आह्वान किया कि बालक देश के उज्ज्वल भविष्य हैं, भिक्षु शासन के गौरव हैं। परिवार की नींव के प्रहरी हैं। ज्ञानशाला गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी की अनमोल देन है। ज्ञानशाला संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला है।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने प्रश्नों का गुलदस्ता प्रस्तुत कर गुड से बेस्ट बनने का ऑफर दिया। नवकार महामंत्र, लोगस्स, उवसग्गहरं स्तोत्र, दर्शन क्यों करें, आसन-प्राणायाम से क्या लाभ आदि कई प्रश्न किए, जिसका उपस्थित परिषद ने सुंदर जवाब दिया। इन संकल्पों से हर मानव जिंदगी की शानदार पारी खेले।

डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल, महिला मंडल ने ज्ञानशाला के संदर्भ में रोचक गीतों की प्रस्तुति दी। वरिष्ठ श्रावक पन्नालाल दुगड़, प्रशिक्षिका मोनिका बैद ने वक्तव्य देते हुए ज्ञानार्थियों का उत्साहवर्धन किया। प्रशिक्षिका निर्मला जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इससे पूर्व ज्ञानशाला के ५० से अधिक ज्ञानार्थियों द्वारा प्रशिक्षिकाओं के नेतृत्व में तेरापंथ भवन से एक रैली निकाली गई। ज्ञानशाला की रैली को नयनाभिराम बनाने में तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, तेरापंथ कन्या मंडल का विशेष सहयोग रहा। विमल छल्लानी, एवं माणकी देवी बैद धर्मपत्नी स्व० मिरजामल बैद के आर्थिक सहयोग से ज्ञानशाला परिवार के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गई एवं प्रेम देवी बरड़िया धर्मपत्नी स्व० अमीचंद बरड़िया ने पारितोषिक प्रदान कर बच्चों को प्रोत्साहित किया।

ज्ञानशाला दिवस

गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि ज्ञानशाला का अर्थ है अपने आपको भावित करना। भावी पीढ़ी का अधार स्तंभ है - ज्ञानशाला। डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने कहा कि बच्चों का सुधार भविष्य का सुधार है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि फूल और बच्चे सृष्टि की सुंदरतम कृति हैं। साध्वी मेरूप्रभा जी व साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की।

ज्ञानशाला कार्यक्रम आस्था संकलेचा, परी, देशना, प्रेरणा जीरावला बच्चों के अर्हम् की वंदना से शुरू हुआ। ज्ञानशाला के संयोजक सुरेश कोठारी ने बच्चों को प्रेरणा दी। मुख्य प्रशिक्षिका शोभा संकलेचा ने भी अपने विचार रखे। छवि हीत्वी भंसाली, खुशी सालेचा, सेजल जीरावला ने गीत एक्शन सॉन्ग की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला में हमने क्या खोया-क्या पाया की कार्यक्रम की प्रस्तुति प्रीत कोठारी, देव हर्सिल, प्रणव जीरावला, रोहन जय सालेचा, सुजल श्रेयांस भंसाली दी कोप्पल सभाध्यक्ष पारसमल जीरावला ने अपने विचार रखे। आभार व्यक्त किया। विजेता भंसाली ने किया।

कार्यक्रम का संचालन सारिका संकलेचा ने किया। ज्ञानशाला के बच्चों को कोप्पलवासी सोहनलाल पारसमल जीरावला की ओर से प्रोत्साहित किया गया। विमला कोठारी, शोभा संकेलचा, संतोष जीरावला, सारिका संकलेचा, विजेता भंसाली, प्रशिक्षिकाओं का पूरा योगदान रहा। तेयुप अध्यक्ष दिनेश संकलेचा का पूरा सहयोग रहा। रैली का आयोजन किया गया।

✦ *बाल पीढ़ी को लौकिक विद्या के साथ अलौकिक विद्या (आध्यात्मिक विद्या) का भी शिक्षण और प्रशिक्षण मिलना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *सेवा तब उच्चस्तरीय हो सकेगी, जब व्यापार के साथ नैतिकता जुड़ेगी।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान-साधना और गुरु

जहाँ तक बाह्य उपलब्धियों का प्रश्न है, लोग गुरु के प्रति अनादर के भाव भी व्यक्त कर देते हैं। क्योंकि वे दूसरे रास्ते से भी प्राप्त हो सकती हैं। किंतु अंतर्विद्या, जिस पर केवल गुरु का ही अधिकार है, वह किसी दूसरे रास्ते से नहीं पाई जा सकती। उसकी प्राप्ति के लिए साधक एकमात्र गुरु को ही आलंबन मानता है तथा पूर्ण विनम्रता और समर्पण के साथ उनका मार्गदर्शन प्राप्त करता है।

गुरु के मार्गदर्शन से आगे बढ़ने वाला साधक उत्तरोत्तर गति करता रहता है। जहाँ कहीं उसके मार्ग में अवरोध आता है, वह दूर हो जाता है और साधक बिना थके चलता रहता है। सम्यक् पथदर्शन के अभाव में दिग्भ्रम होने की संभावना बनी रहती है। कुछ लोग पुस्तकें पढ़कर या किसी से सुनकर साधना का प्रारंभ करते हैं। वे व्यक्ति या तो पाँच-दस दिन में ही ऊबकर साधना का क्रम तोड़ देते हैं अथवा भटक जाते हैं। भटकने के बाद उनका चित्त विक्षिप्त-सा हो जाता है। विक्षिप्तता के साथ साधना का कोई तालमेल नहीं बैठता। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने प्रति और अपनी स्वीकृत साधना के प्रति अनास्थावान हो बैठता है। उसकी अनास्था उसके परिपार्श्व में भी अनास्था की तरंगें विकीर्ण कर देती हैं, जिसका अवांछित प्रभाव किसी भी अपरिपक्व साधक पर हो सकता है। इस दृष्टि से साधना के क्षेत्र में गति करने के लिए सुयोग्य गुरु का पथदर्शन बहुत जरूरी है।

प्रश्न : साधना के लिए अपने सुयोग्य गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक बताया है। यह मार्गदर्शन निश्चित रूप से अच्छा परिणाम ला सकता है। पर गुरु की योग्यता का मानदंड क्या हो? हमारे पास ऐसी कौन-सी कसौटी हो सकती है, जिस पर हम सुयोग्य गुरु की परख कर सकें?

उत्तर : गुरु की कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती। फिर भी व्यवहार की भूमिका पर चलने वाला व्यक्ति परिभाषा जानना चाहता है। क्योंकि असीम आकाश को मकान की सीमा में बाँधे बिना वह रहने के लिए उपयोगी नहीं हो सकता। गुरु की गरिमा को अभिव्यक्ति देने के लिए शब्द सक्षम नहीं, इसलिए उसे व्यवहार के धरातल पर ही परिभाषित किया जा सकता है। व्यवहार के स्तर पर गुरु वह होता है, जो महाव्रती हो। जिसकी आत्मा महाव्रतों की सम्यक् आराधना से भावित नहीं है, वह ध्यान की साधना में निष्णात नहीं हो सकता। महाव्रती होने के साथ उसकी ध्यान साधना में रुचि भी होनी चाहिए। क्योंकि रुचि के अभाव में वह न तो ध्यान के प्रयोग कर सकता है और न दूसरों को करा सकता है।

ध्यान-प्रशिक्षण के लिए कषाय-विजय की साधना भी बहुत आवश्यक है। कषाय-विजय का फलित है—क्षांति, मुक्ति, ऋजुता और मृदुता। क्रोध पर विजय प्राप्त करने वाला शांत होता है। लोभ पर विजय पाने वाला मुक्त-निर्लोभ होता है। माया को पराजित कर देने वाला ऋजु होता है। और मान को निरस्त करने वाला मृदु बनता है। **'कषायमुक्ति किल मुक्तिरेव'**—इस सूक्त का रहस्य यही है कि मुक्त होने के लिए कषाय-विजय की साधना करो।

स्थानांग सूत्र में धर्म के चार द्वार बताए हैं—क्षांति, मुक्ति, आर्जव और मार्दव। ये चार धर्मद्वार ही मोक्षद्वार हैं। इनमें प्रवेश पाए बिना साधना नहीं हो सकती। क्योंकि अपनी ध्यान-साधना का मुख्य प्रयोजन कषाय-मुक्ति ही है। जो साधक इसमें परिपक्व नहीं होता, वह किसी अन्य व्यक्ति को ध्यान की दीक्षा दे ही नहीं सकता क्योंकि यह सारी साधना वीतरागता की साधना है। इस साधना से संपन्न व्यक्ति ही गुरु के गरिमापूर्ण पद को अलंकृत कर सकता है।

केवल प्राण की साधना करने वाले साधक भी ध्यान के गुरु बनते हैं। उनके पास ध्यान के तत्त्व मिल सकते हैं। पर वे ऐहिक सिद्धियों और चमत्कार-प्रदर्शन की सीमा तक ही आगे बढ़ पाते हैं। अध्यातम-साधना क्षांति, मुक्ति आदि की साधना के बिना सफल नहीं हो सकती। इसके बिना अध्यात्म के द्वार में प्रवेश भी नहीं हो सकता।

चमत्कार भी एक सिद्धि है। चमत्कार का प्रदर्शन करने वाला व्यक्ति अनेक व्यक्तियों को आश्चर्यचकित बना सकता है। पर यह व्यक्तित्व के रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं है। इससे व्यक्ति अंतर्मुखी नहीं बन पाता। अंतर्मुखता या व्यक्तित्व परिवर्तन के लिए तो चामत्कारिक प्रदर्शनों से दूर रहकर कषाय-मुक्ति या वीतरागता की ही साधना करनी होगी।

गुरु की एक परिभाषा हो सकती है—प्रेक्षा-योग की पारगामिता। जो प्रेक्षाध्यान की साधना कर चुका है, इस विषय में निष्णात हो चुका है, और पूर्ण धृति का विकास कर चुका है, वह भी गुरु का दायित्व वहन कर सकता है। दायित्व निर्वाह के लिए गुरु का कुशल परिज्ञावान होना नितांत अपेक्षित है।

परिज्ञा दो प्रकार की होती है—ज्ञ परिज्ञा और प्रत्याख्यान परिज्ञा। यहाँ परिज्ञा शब्द का प्रयोग व्यापक संदर्भ में हुआ है। जो व्यक्ति जानने, बदलने और छोड़ने की क्षमता रखता हो, वही परिज्ञावान हो सकता है और जिस व्यक्ति की परिज्ञा-चेतना, जागृत हो जाती है, वह व्यक्ति गुरु बन सकता है।

सुयोग्य गुरु, जिज्ञासु शिष्य और साधना की समुचित सामग्री का उपयुक्त योग मिलने से कोई भी साधक साधना के मार्ग में अच्छी गति कर सकता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(१५)

स्फटिक से उजले तुम्हारे जन्मदिन पर
स्फटिक-सी कमनीय वे सारी कथाएँ
आज कहने और सुनने की ललक है
मूर्त हो जाएँ सभी वे कल्पनाएँ।।

मुक्त हाथों से उसे बाँटो जहाँ में
पुलक जीवन में तुम्हारे जो भरी है
बोध तट का देव! तुम ही दे सकोगे
जो खड़ी मझधार में जीवन-तरी है
चाह सीमाहीन जो मन में जगाई
पूर्ण करने दो तुम्हीं संभावनाएँ।।

इस धरा पर बीतते दिन-रात कितने
पुण्य पल ये आज के अनमोल सारे
वर्षभर करते प्रतीक्षा हम इसी की
चमकते हैं नील नभ में नव सितारे
हर नए युग का सृजन होगा इसी दिन
सृजित होगी आज अभिनव अल्पनाएँ।।

अधखुली कलियाँ हृदय की कांत किसलय
आज तुम पर हो निछावर महकते हैं
ये अबींधे भावना के रुचिर मोती
मुग्ध प्राणों के विहग सब चहकते हैं
जिंदगी की साधना है सफल तुमसे
खिल रहा आकाश पुलकित हैं दिशाएँ।।

याद आते ही तुम्हारे जन्मदिन की
गीत की कड़ियाँ स्वयं निर्माण पातीं
भावना के धवल लाजा वारती हैं
पौरकन्याएँ मधुर स्वर गुनगुनाती
दे सकूँ तुमको कहाँ सौगात ऐसी
देवते! हैं मुखर कोमल कामनाएँ।।

(१६)

तुम निर्मल निर्झर इमरत के जीवन में रसधार बहे।
पाया तुमसे तेज समुज्ज्वल बस उसका आधार रहे।।

तुम प्रतीक हो पौरुष के उसमें विश्वास तुम्हारा है
नियति भाग्य तो दूर स्वयं ब्रह्मा भी तुमसे हारा है
मुक्त तुम्हारे खातिर हर दिन रिद्धि-सिद्धि के द्वार रहे।।

स्वप्न तैरते नए-नए नित इन नयनों के सागर में
कैसे भर पाऊँ मैं उनको शब्दों की लघु गागर में
हर झंझा में बनकर तुम ही नाव और पतवार रहे।।

रहा अलक्षित इन आँखों से अब तक तो व्यक्तित्व विराट
हर उलझन के समाधान तुम नूतन सपनों के सम्राट
सदा सुरीली लय में मुखरित हृत्तंत्री के तार रहे।।

करें आरती पल-पल उजली आशाओं के दीप जले
भावों के स्वस्तिक उकेरती संवेदन की सीप लिए
श्रद्धा से अभिषिक्त भावना से भीनी मनुहार रहे।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

क्रिया-अक्रियावाद

मेघः प्राह

(२७) कर्माकर्मविभागोऽयं, सम्यग् बुद्धो मया प्रभो!
साध्यसिद्धौ महत्तत्त्वं, अप्रमादः त्वयोच्यते।।

मेघ बोला—भगवन्! मैंने कर्म और अकर्म का यह विभाग सम्यक् प्रकार से जान लिया है। आपने अप्रमाद को साध्य-सिद्धि का महान् तत्त्व बतलाया है।

कर्म और अकर्म का यह विभाजन मेघ ने भगवान् महावीर के श्रीमुख से सुना। कर्म और अकर्म का बोध सचमुच कठिन है। गीता में कहा है—**'कवयोप्यत्र मोहिताः'** बड़े-बड़े विद्वान् भी इस विषय में विमुग्ध हो जाते हैं। गीता में इसका विवेचन कर्म, अकर्म और विकर्म के रूप में उपलब्ध होता है। भगवान महावीर ने कर्म और अकर्म इन दोनों में ही सब समाहित कर दिया।

मेघ का मन इस विभाजन को सुन समाहित हो गया। वह कहता है 'प्रभो! आप द्वारा विवेचित इस विषय को मैंने अच्छी तरह से जान लिया है।' 'सम्यग् बुद्धो' शब्द के द्वारा यह ध्वनित होता है कि मैंने केवल बुद्धि के स्तर पर नहीं जाना है, उपादेय बुद्धि के द्वारा जाना है, स्वीकार किया है।

साधना का मूल तत्त्व है—अप्रमाद। जीवन का पूरा चक्र प्रमाद की धुरी पर चलता है। प्राणी-जगत् प्रमाद से अधिक परिचित है, अप्रमाद से नहीं। प्रमाद के व्यूह से बाहर निकलने के लिए अप्रमाद की साधना अपेक्षित है। उस स्थिति में अप्रमाद होगा—जागरूकता, होश भगवान महावीर ने लक्ष्य के प्रति यत्नवान् रहो, इस पर अधिक बल दिया है। जागरूकता के बिना की गई क्रिया केवल द्रव्य-क्रिया है, उससे साध्य की प्राप्ति नहीं होती। साध्य-सिद्धि में जागरूकता की महत्ती भूमिका है। अप्रमाद जागरूकता है, वर्तमान का क्षण है, और वह चेतना की निकटता का क्षण है। भगवान महावीर का जीवन इसका ज्वलंत प्रमाण है। अन्य संतों ने भी इसे मूल तत्त्व माना है, और इसका प्रयोग किया है।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे
क्रियाक्रियावादनामा षष्ठोऽध्यायः।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-१६ : सम्यक्त्व प्राप्ति के पश्चात् जीव संसार में कब तक परिभ्रमण कर सकता है?
उत्तर : सम्यक्त्व प्राप्ति के पश्चात् जीव उसी भव में मुक्त हो सकता है। अधिकतम कुछ कम अर्धपुद्गल परावर्तन तक परिभ्रमण कर सकता है। क्षायिक सम्यक्त्वी अधिकतम तीन भव के बाद अवश्य मोक्षगामी होता है।

प्रश्न-१७ : क्या सम्यक्त्वी परित संसारी होता है?
उत्तर : सम्यक्त्वी परित और अपरित दोनों होते हैं?

प्रश्न-१८ : सम्यक्त्वी मर कर कहाँ जाता है?
उत्तर : सम्यक्त्वी दो प्रकार के होते हैं—(१) औदारिक शरीरी, (२) वैक्रिय शरीरी। औदारिक शरीरी अर्थात् मनुष्य और तिर्यंच। सम्यक्त्व प्राप्ति के बाद जब ये आयुष्य का बंध करते हैं, तो वे निश्चित ही देवगति में, उसमें भी केवल वैमानिक देवलोक में जाते हैं। वैक्रिय शरीरी—नारक और देव। सम्यक्त्व प्राप्ति के बाद केवल मनुष्य गति का ही आयुष्य बंध करते हैं।
सम्यक्त्व प्राप्ति से पूर्व यदि आयुष्य का बंध हो जाए तो औदारिक शरीरी चारों गतियों में जा सकते हैं। वैक्रिय शरीरी केवल मनुष्य और तिर्यंच गति में जाते हैं।

प्रश्न-१९ : क्या सम्यक्त्वी के अकाम निर्जरा होती है?
उत्तर : सम्यक्त्वी के सकाम निर्जरा होती है। कभी परवशता या स्थिति विशेष में अकाम निर्जरा हो सकती है।

प्रश्न-२० : औपशमिक सम्यक्त्वी क्या क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ हो सकता है?
उत्तर : औपशमिक सम्यक्त्वी क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ नहीं हो सकता, उपशम श्रेणी पर आरूढ़ हो सकता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य सुहस्ती

आचार्य सुहस्ती के दीक्षागुरु थे आचार्य स्थूलभद्र। तीस वर्ष की अवस्था में संयमी बने। आचार्य महागिरि के पास इनका अध्ययन विशेष रूप से चला। दशपूर्वी आचार्यों में आर्य महागिरि का प्रथम तथा आचार्य सुहस्ती का दूसरा क्रम है।

एक बार आचार्य महागिरि के साथ ही आचार्य सुहस्ती कौशाम्बी में पधारे। उस समय वहाँ भयंकर दुष्काल था। विशाल साधु संघ विभिन्न स्थानों में ठहरा हुआ था। श्रमणों के प्रति श्रावकों की अत्यधिक भक्ति होने से संतों को पर्याप्त रूप में आहार मिल जाता था। एक दिन आचार्य सुहस्ती का एक शिष्य भिक्षार्थ गया। आहार लेकर लौट रहा था उस समय एक रंक भी साधुओं के पीछे हो गया। भूख से बेहाल बने रंक ने साधु से आहार की याचना की। मुनिवर्य ने सीधा-सा उत्तर दे दिया—'हम गुरु की आज्ञा के बिना कोई भी कार्य नहीं करते।'

रंक भूखा था। संतों के पीछे आचार्य सुहस्ती के पास आकर भोजन की याचना की। आचार्य ने ज्ञानबल से देखकर जाना—इस रंक से जैनशासन की अधिक प्रभावना होगी। यही सोचकर कहा—'साधुव्रत स्वीकार करने पर ही आहार दिया जा सकता है।' रंक ने सोचा—अन्नाभाव में मरने की अपेक्षा साधुभाव क्या बुरा है? यों सोचकर संयमी बन गया। भूख से बेहाल बने को पर्याप्त भोजन मिल गया। वह क्षुधार्त मात्रा का विवेक न रख सका। अपच के कारण उसी रात्रि में समता की आराधना करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो गया। अव्यक्त साधना के बल पर वह अवन्तिनरेश सम्राट् अशोक का प्रपौत्र तथा कुणाल के पुत्र के रूप में पैदा हुआ। वह संप्रति नाम से पुकारा जाने लगा।

संप्रति राजा बना। आचार्य सुहस्ती को देखकर जातिस्मरण ज्ञान हो गया। आचार्य के चरणों में झुका। आचार्य ने पूर्वजन्म का सारा वृत्त बताया। धर्म का उपदेश सुनकर पूर्ण भक्त बना। जैन धर्म का प्रचारक, प्रवचन प्रभावक तथा सम्यक्त्वी और अणुव्रती बना।

दुष्काल के समय सम्राट् ने अपने प्रजाजनों को श्रमणों को अपेक्षित सुविधा प्रदान करने का संकेत दिया। उन सबका मूल्य स्वयं के यहाँ से चुकाने के लिए भी कह दिया। श्रमणों को यथेप्सित आहार मिलने लगा। कल्प-अकल्प का विवेक छोड़कर साधुगण सुविधावादी बन गए। आर्य महागिरि निर्दोष परंपरा के पक्षपाती थे। यह आचारशैथिल्य उन्हें अखरा। उन्होंने श्रमणों के इस पेटार्थीपन पर प्रखर प्रहार करते हुए आचार्य सुहस्ती का संबंध-विच्छेद कर दिया। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् सांभोगिक संबंध-विच्छेद की घटना संभवतः यह प्रथम ही थी।

आचार्य सुहस्ती महागिरि का बहुत सम्मान करते थे। अतः बहुत-बहुत विनय किया, भविष्य में ऐसी गलती न करने के लिए भी कहा। आचार्य सुहस्ती के अनुनय से प्रभावित होकर आर्य महागिरि ने संबंध-विच्छिन्नता का प्रतिबंध तो हटा लिया पर अपना आहार-व्यवहार उनके साथ नहीं किया।

इतिहास अतीत की ओर नही मुड़ा करता है। आचार्य सुहस्ती तो फिर भी संभले पर श्रमणों में पनपा हुआ सुविधावाद रुक न सका।

आचार्य सुहस्ती के समय में ही गणधर वंश, वाचक वंश और युगप्रधान आचार्य की परंपराएँ प्रारंभ हुईं। गण का दायित्व संभालने वाले गणाचार्य कहलाए, जिनका संबंध अपने गण तक ही रहता। अपने गण और अन्य गणों को वाचना देने वाले वाचनाचार्य कहलाए, जो आगम-वाचना देते थे। सब विधि आध्यात्मिक दिशाबोध देने वाले युगप्रधान आचार्य कहलाते थे।

संप्रति ने जैन धर्म के प्रचार के लिए अपने राज-कर्मचारियों को मुनिवेश पहनाकर द्रविड़, महाराष्ट्र, आंध्र आदि देशों में भेजा। वे अपरिचित और अनार्य देशों में घूमे। सदोष आहार भी कर लेते। यों करके साधुओं के विहार योग्य भूमिका जमा दी। बाद में संप्रति की प्रार्थना पर आचार्य सुहस्ती ने अपने श्रमणों को भी वहाँ भेजा, ऐसा कहा जाता है।

इस प्रकार आचार्य सुहस्ती के शासनकाल में अनेक अकल्पित आयामों का उद्घाटन हुआ।

तीस वर्ष की अवस्था में दीक्षित होकर सत्तर वर्ष तक संयम धर्म की परिपालना कर वी०नि० २९२ (वि०पू० १७८) में आर्य सुहस्ती अवन्ति में दिवंगत हुए।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 सितंबर, 2021

✦ *अपना घर भरने के लिए व्यापार के माध्यम से लोभवश किसी के साथ धोखा करना गलत होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तप अभिनंदन के आयोजन

दो मासखमण तप अभिनंदन

मैसूर।

तेरापंथ भवन में आयोजित मासखमण तप अभिनंदन पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि तपसी भाई माणकचंद मेहता और सायरदेवी चौहान ने सहजता के साथ प्रेरणा को स्वीकार किया और पूर्ण मनोबल के साथ इन्होंने हमारी भावना साकार की है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के संदेश तपस्वियों को प्राप्त हुए ये आत्मबल बढ़ाने वाले हैं। साध्वीवृंद के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभाध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, तेयुप के अध्यक्ष विक्रम पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दक, मदन सिंह चौहान, प्रदीप चौहान, नम्रता मेहता, कविता मारू, बबीता चौहान व अरुणा मुणोत ने तपस्वियों के प्रति शुभकामनाएँ प्रस्तुत की।

महिला मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला ने अभिनंदन गीत की प्रस्तुति दी। कलावली संचेती और मीनल आच्छा, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला ने पपेट शो के द्वारा तप अभिनंदन की प्रस्तुति दी। कल्पना, वंशिका और दिव्यांशी चौहान ने अपनी दादी के वर्धापन में लघु नाटिका प्रस्तुत की। साध्वीश्री जी ने तपस्वियों को तप प्रत्याख्यान करवाया।

तेरापंथ ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष कैलाशचंद देरासरिया ने एवं तेरापंथ सभा के मंत्री अशोक दक ने तेरापंथ महिला मंडल की उपाध्यक्ष अनिता कटारिया ने तप अभिनंदन पत्रों का वाचन किया। साध्वीप्रमुखाश्री द्वारा तपस्वियों ने नाम प्रदत्त संदेश का वाचन तेमम की पूर्व अध्यक्षा विजयलक्ष्मी आच्छा एवं तेरापंथ सभा के मंत्री अशोक दक ने किया। तप संकल्पित भाई-बहनों एवं तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप ने सामुहिक रूप से तपस्वियों का अभिनंदन और सम्मान किया।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने किया।

इस अवसर पर यशवंतपुर, बैंगलोर, चंदरायपटणा, जयपुर, श्रीरंगपटना, दिल्ली, अजमेर आदि क्षेत्रों के श्रावक उपस्थित रहे। इस पूरे कार्यक्रम का लाइव प्रसारण तेयुप, मैसूर के फेसबुक पेज पर संगठन मंत्री विनोद मुणोत और धर्मेन्द्र रांकावत के द्वारा किया गया।

मासखमण तप अभिनंदन

कोयंबटूर।

मुनि सुधाकर जी ने तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित राजू देवी पुगलिया के मासखमण अभिनंदन समारोह में कहा कि तपस्या साधना और सफलता का मूल है। तपस्या के बिना कोई साधना सफल नहीं हो सकती। सुखी और स्वस्थ जीवन के लिए छोटे-बड़े निराहार तप के प्रयोग भी जरूरी हैं। विश्व में जितने भी विचारक और प्रतिभा संपन्न महापुरुष हुए हैं उन्होंने खाने की आसकित का परित्याग किया है। तपस्या आत्मा शुद्धि और मानसिक शांति का प्रमुख साधन है। मुनि सुधाकर जी ने आगे कहा कि राजू देवी पुगलिया ने मासखमण कर आत्मबल, मनोबल और संकल्पबल का महान परिचय दिया है। पुगलिया परिवार धर्म और धर्मसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित परिवार है।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि राजू देवी पुगलिया ने शुगर की समस्या होते हुए भी मासखमण करके यह बता दिया है कि तपस्या हर आधि, व्याधि व उपाधि का समाधान है एवं इससे समाधि मिलती है। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष प्रेमचंद सुराणा एवं तेयुप मंत्री रोहित चोरड़िया ने अपने वक्तव्य द्वारा तपस्वी का अभिनंदन किया। महिला मंडल अध्यक्ष मंजु गीडिया एवं सदस्यों द्वारा सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की गई। तपस्वी बहन के परिवार से मंजु कोटेचा, पुत्रवधू इंद्रा पुगलिया, पौत्रवधू शिखा पुगलिया, पौत्र कुशाल पुगलिया, सरिता चोरड़िया, मधु चोरड़िया ने अपने विचार रखे। विनोद लुणिया ने अन्य चारित्रात्माओं से प्राप्त संदेश का वाचन किया। सभा के उपाध्यक्ष प्रकाश बोथरा ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी से प्राप्त संदेश का वाचन किया। अंत में मुनिश्री ने राजू देवी पुगलिया को तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका ख्याति सेमलानी ने किया।

लोगस्स तथा नमस्कार महामंत्र की प्रतियोगिता का आयोजन

जीन्द।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेयुप तथा महिला मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में लोगस्स तथा नमस्कार महामंत्र की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वीश्री के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि लोगस्स का पाठ महत्त्वपूर्ण है, इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति है। यह सप्तपदी मंत्र है। लोगस्स में कहा गया है कि मुझे आरोग्य, शरीर का आरोग्य मन की स्वस्थता मिले। बोधि मिले, चेतना मिले, समाधि मिले, जो समाधि में चला जाता है वह आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त हो जाता है। नमस्कार महामंत्र मंत्र नहीं महामंत्र है, सब पापों को नाश करने वाला है।

सभी प्रतियोगी पूरी तैयारी के साथ आए, उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगियों की प्रस्तुति सुंदर रही। कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने में सर्वाधिक श्रम साध्वी सुलभयशा जी का रहा। कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका डॉ० अनिल जैन, डॉ० सुरेश जैन, महिला मंडल अध्यक्ष कांता मित्तल ने निभाई। दोनों प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया गया। निर्णायकों को महिला मंडल, जीन्द द्वारा साहित्य से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कुणाल मित्तल, राजेश जैन, गौरव जैन का अथक परिश्रम रहा। संचालन कुणाल मित्तल ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक श्रीचंद जैन को तेरापंथ सभा द्वारा साहित्य से सम्मानित किया गया।

सुखी और स्वस्थ जीवन के लिए अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों का पालन जरूरी

सादुलपुर-राजगढ़।

अणुव्रत समिति द्वारा सेठिया अतिथि भवन में शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मोहता पब्लिक स्कूल की अध्यापिका नीतू शर्मा द्वारा अणुव्रत आचार संहिता के वाचन से शुभारंभ हुए समारोह में साध्वी मानकुमारी जी ने श्रुतिका, भावना और हरिओम के कला कौशल की सराहना करते हुए अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों पर प्रकाश डाला और अणुव्रत के व्रतों का पालन करने की प्रेरणा प्रदान की।

समारोह में समिति अध्यक्ष और प्रतियोगिता संयोजक ने रक्षाबंधन पर्व पर संपन्न हुई निबंध, कविता लेखन प्रतियोताि में मोहता बालिका विद्यालय की भावना शर्मा का निबंध लेखन में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर, मोहता पी०जी० कॉलेज की श्रुतिका सैनी और एम०पी०एस० के छात्र हरिओम वशिष्ठ का कविता लेखन में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अणुव्रत समिति की तरफ से केडबरी गिफ्ट पैक और स्टेशनरी प्रदान कर सम्मानित किया। हनुमानमल सेठिया परिवार की ओर से कमल बोथरा और कृष्ण शर्मा ने तीनों विजेताओं को रजिस्टर प्रदान कर सम्मानित किया गया। अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष प्रिंसिपल डॉ० सुमन जाखड़, प्रिंसिपल सुरेंद्र सिंह पुनिया, मीडिया इंचार्ज राजेश पांचाल, राधेश्याम वर्मा और मनोज जैन ने बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित की। साध्वी मानकुमारी जी के मंगलपाठ के साथ समारोह संपन्न हुआ।

प्रेक्षाध्यान शिविरार्थियों का अभिनंदन

लाडनूं।

अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान शिविरार्थियों का अभिनंदन किया गया। मुनिश्री ने कहा कि प्रेक्षाध्यान जीवन जीने का एक विशिष्ट माध्यम है। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास से व्यक्ति अपने जीवन को सुरक्षित कर सकता है। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान को जीवन की संजीवनी बताया। इससे पूर्व स्वागत वक्तव्य देते हुए समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने योग को जीवन शैली का अंग बनाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में देशभर से आए लगभग १४ शिविरार्थियों का दुपट्टा व साहित्य भेंट कर अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर मुंबई से विशेष रूप से समागत योगाचार्य डॉ० प्रकाश सोनी रत्न का अभिनंदन भी किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति, सूरत के परामर्शक गौतम गादिया, हनुमानमल शर्मा, अब्दुल हमीद मोयल, शांतिलाल फुलवारिया, कंचन चोरड़िया, अंजना शर्मा, रेनू कोचर, अनीता चोरड़िया सहित अनेक लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन करते हुए मंत्री डॉ० वीरेंद्र भाटी मंगल ने समिति की गतिविधियों को रेखांकित किया। आभार ज्ञापन शिवशंकर बोहरा ने किया।

वृक्षारोपण व पर्यावरण संरक्षण पर संगोष्ठी

राजसमंद।

अणुव्रत समिति द्वारा श्री कृष्ण गोशाला महासतियों की मादड़ी में सघन वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ० वीरेंद्र महात्मा ने की। डॉ० महात्मा के नेतृत्व में विभिन्न औषधि व फल के साथ छायादार पौधे लगाए गए। उन्होंने कहा कि मानव संरक्षण के लिए आज प्रकृति को सहजने के लिए सभी को सघन वृक्षारोपण करना चाहिए।

कार्यक्रम में मदन धोका, संगीता माहेश्वरी, ज्योत्सना पोकरना, हिम्मत बाबेल, रमेश मांडोत, सूरज जैन ने अपने विचार प्रगट किए। गोशाला संचालक सोमानी व सभी कर्मचारियों का गोशाला के प्रति समर्पण व साफ-सफाई के लिए धन्यवाद व सम्मान भी किया गया। अणुव्रत समिति के कोषाध्यक्ष मूलचंद भालावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पर्यावरण सुरक्षा जागरूकता अभियान

सिरसा।

अणुव्रत समिति ने पर्यावरण सुरक्षा जागरूकता अभियान के अंतर्गत धुकड़ा गाँव की गौशाला में ४० पेड़ लगाकर सभी को जागरूक किया। पौधारोपण के बाद सभी ने यह संकल्प भी लिया कि हम इन पौधों को जब तक यह फलदार नहीं होते इनकी देखभाल भी करेंगे। इस अवसर पर अणुव्रत समिति मंत्री अमित सिंघी, निवर्तमान अध्यक्ष चंपालाल जैन, तेरापंथी सभा अध्यक्ष देवेंद्र डागा, मंत्री रंजीत गुजरानी, महेंद्र नाहटा, सहमंत्री राजेश पुगलिया, आनंद सुराणा, मानकचंद बैद, लक्ष्य गुजरानी, विमल बैद आदि उपस्थित थे।

टीकाकरण शिविर का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में एवं बीबीएमपी के सहयोग से वैक्सीनेशन 'टीकाकरण' के अंतर्गत चौथा कैंप अर्हम भवन के प्रांगण में लगाया गया। जिसमें लगभग ३०० साथियों ने टीकाकरण का लाभ लिया तथा बीबीएमपी की पूरी टीम का अच्छा सहयोग रहा।

इस अवसर पर तेमम की अध्यक्षा प्रेम बाई भंसाली, मंत्री सुमित्रा बरड़िया, तेयुप अध्यक्ष अमित दक एवं उनकी टीम, सभा के उपाध्यक्ष महेंद्र टेबा, मंत्री मंगल कोचर, सहमंत्री प्रकाश गांधी, पवन चावत, राहुल सेठिया, ज्ञानू नाहटा, विकास बेगवानी, दिनेश मेहता, योगेश पोरवाड़, हेमंत पटावरी, ऋषभ बैद उपस्थित थे।

जीवन की असली संपदा है श्रावक के बारह व्रत

राजलदेसर।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने बारह व्रत की कार्यशाला में कहा कि श्रावक वह होता है जो श्रद्धाशील, विवेकशील और कर्मशील होता है। श्रावक को श्रमणोपासक कहते हैं, क्योंकि वह श्रमणों समुपासना करता है। बारह व्रत जीवन की असली संपदा है। जीवन में राग-द्वेष की गाँठें ना रहें। व्रतों के पालन का उद्देश्य है—आत्मा का कल्याण, कर्मों की निर्जरा।

इस अवसर पर डॉ० परमयशा जी, साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने गीत का संगान करते हुए राग-द्वेष रहित तनावमुक्त जीवन का आह्वान किया। श्रावक संबोध के आधार पर बारह व्रतों को अध्यात्म जगत की महान संपदा बताया। तेयुप के अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल ने श्रावक दीक्षा पुस्तक का वितरण किया एवं श्रावक व्रत धारण करने वालों को फार्म भरने के बारे में बताया।

बारह व्रतों की विवेचना

बोइनपल्ली, हैदराबाद।

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा बारह व्रत कार्यशाला आयोजित की गई। साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि व्रत श्रमण संस्कृति का प्राण तत्त्व है। व्रत व्यक्ति को आत्मा के निकट ले जाता है और बाह्य जगत से अनासक्त बनाता है। युग परिवर्तन के बाद भी व्रतों के प्रति घनीभूत आस्था उनके त्रैकालिक महत्त्व को उजागर कर रही है।

कार्यशाला में तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने स्वागत भाषण किया। नवनीत छाजेड़, राकेश धारीवाल व प्रवीण श्यामसुखा ने विजय गीत का संगान कर मंगलाचरण किया। संयोजक सुदीप नौलखा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रम किया। सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति भी अच्छी रही।

जीवन को अध्यात्म की दिशा दिखाते हैं बारह व्रत

बैंगलुरु।

अभातेयुप के निर्देान में तेयुप द्वारा साध्वी लावण्यश्री जी, साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित बारह व्रत कार्यशाला का समापन समारोह हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से प्रारंभ हुआ। सभा के अध्यक्ष सुरेश दक ने स्वागत वक्तव्य दिया। तेयुप मंत्री प्रवीण बोहरा ने बताया कि इस वर्ष १०२ श्रावक-श्राविकाओं ने बारह व्रत स्वीकार किया। ज्ञानशाला दिवस के उपलक्ष्य पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा बारह व्रत के होल्डर्स के माध्यम से प्रस्तुति दी।

साध्वी लावण्यश्री जी ने श्रावक समाज को बारह व्रत कार्यशाला में सुसफल प्रशिक्षण दिया व सभी व्रत स्वीकार कर रहे श्रावकों को बारह व्रत का प्रत्याख्यान करवाया।

तेयुप के अध्यक्ष विनय बैद ने बारह व्रत कार्यशाला के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यशाला का संयोजकीय दायित्व ओमप्रकाश चावत ने पूरी निष्ठा से संपन्न किया। कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप नेत्रदान राष्ट्रीय प्रभारी नवनीत मूथा ने किया।

बारह व्रत कार्यशाला के विविध आयोजन

बारह व्रत कार्यशाला

वडोदरा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने बारह व्रत के सभी नियमों को विस्तारपूर्वक सभी को समझाया और सभी को अधिक से अधिक संख्या में बारह व्रती बनने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष हस्तीमल मेहता, तेयुप अध्यक्ष पंकज बोल्या, महिला मंडल अध्यक्षा गीता देवी श्रीमाल, ज्ञानशाला के बच्चे एवं समाज के सभी भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

बारह व्रत कार्यशाला 'सोपान' का आयोजन

ज्ञानबाग कॉलोनी।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला 'सोपान' का आयोजन किया गया। तेयुप के तत्त्वावधान में अभातेयुप द्वारा निर्देशित यह कार्यशाला ज्ञानबाग कॉलोनी में परिसंपन्न हुई। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि व्रतधारी होना जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। बारह व्रती बनना स्वयं को सुरक्षित करने का उपाय है। भगवान महावीर ने तीन प्रकार के श्रावकों का वर्णन किया है—सुलभ बोधि, बारह व्रती और प्रतिमाधारी।

मुख्य वक्ता साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि संयम, साधना व सीमांकन का त्रिसूत्री उपक्रम है—बारह व्रत कार्यशाला 'सोपान'। संयम वृत्तियों के उद्दाम प्रवाह को रोकने वाला बाँध है।

कार्यशाला का शुभारंभ विजय गीत से हुआ, जिसे तेयुप के संगायकों ने प्रस्तुति दी। साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी व साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने वक्तव्य तथा प्रदीप कोठारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मंच संचालन तेयुप उपाध्यक्ष प्रमोद भंडारी ने किया। भाई-बहनों ने अपने संकल्प पत्र भरकर बारह व्रत स्वीकार किए।

बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला

विशाखापट्टनम।

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप ने साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कल्पयशा जी ने मंगलाचरण से किया। साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था रखने वाले सच्चे श्रावक कहलाते हैं। सच्चे श्रावक को बारह व्रत स्वीकार करने चाहिए। साध्वीश्री जी ने कहानी के माध्यम से साधु पद-श्रावक पद के बारे में भी बताया। तेयुप अध्यक्ष ऋषभ सुराणा ने संक्षेप में साधु व्रत व श्रावक व्रत के बारे में बताया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि व्रत मनुष्य के लिए एक सुरक्षा कवच का काम करता है, साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने हम श्रावकों का ध्यान रखते हुए बहुत ही सरल तरीके से बारह व्रत का सीमाकरण किया है, जिसका आप पालन करते हुए अपने सभी दैनिक कार्य कर सकते हैं, साध्वीश्री जी ने एक-एक करके सभी व्रतों के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला के अंत में सदस्यों ने सभी को व्रत दीक्षा संकल्प स्वीकृति पत्र दिया।

व्रत पालन से होती जिनशासन की प्रभावना

डी०वी० कॉलोनी।

साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा बारह व्रत कार्यशाला सिकंदराबाद में आयोजित की गई। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि बारह व्रतों का कार्यक्रम हर साल इसलिए मनाया जाता है, क्योंकि हम धर्म, त्याग और संयम को समझते हैं। जैन धर्म में साधु और गृहस्थ दोनों का बहुत बड़ा महत्त्व है। साधु तो पाँच महाव्रत का पालन करता है। श्रावक भी धर्म का आचरण करता है, बारह व्रतों का पालन करता है, जिससे जैन शासन की प्रभावना होती है। साधु ने तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना करने का मार्ग अपनाया है वो तो महाव्रतधारी होते हैं। लेकिन गृहस्थ घर में रहकर के ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप रूपी बारह व्रतों की आराधना करता है। तो वह अपने जीवन को तो सुधारता ही है साथ ही जैन शासन की प्रभावना भी करता है।

साध्वीश्री जी ने गुरुदेव तुलसी द्वारा बारह व्रत पर रचित गीतिका का संगान किया। बारह व्रत कार्यशाला के संयोजक श्रेणिक गोलछा ने अपने विचार रखे। तेयुप, हैदराबाद के मंत्री वीरेंद्र घोषल ने बारह व्रतों के बारे में उद्गार व्यक्त किए और सभी से आह्वान किया कि बारह व्रतों को धारण करने का प्रयास करें।

इस अवसर पर तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा, उपाध्यक्ष विनोद दुगड़ व सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

जीवन को अध्यात्म की दिशा दिखाते हैं बारह व्रत

पेटलावद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा मुनि वर्धमान कुमार जी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेयुप, पेटलावद के अध्यक्ष रूपम पटवा ने बारह व्रत कार्यशाला के कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। मुनि वर्धमान कुमार जी ने श्रावक समाज को बारह व्रत के विषय में अपना उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि जैन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर आचार्यों द्वारा बारह व्रतों का निर्माण किया गया, जिससे संसार में रहकर गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भी व्यक्ति कर्मों के बंधन को कम कर सकता है।

तेयुप मंत्री महेश भंडारी ने बताया कि इस वर्ष कई श्रावक-श्राविकाओं द्वारा मुनिश्री से बारह व्रत की महत्ता समझकर स्वीकार किए। श्रावक समाज में आध्यात्मिक विकास हेतु संस्था समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम करती रहती है।

बारह व्रत कार्यशाला

गंगाशहर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा बारह व्रत कार्यशाला साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन के प्रांगण में आयोजित हुई। कार्यशाला प्रभारी मांगीलाल बोथरा ने बताया कि कार्यशाला के अंतिम दिन उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं ने एक वर्ष के लिए व्रत स्वीकार किए। मंगलाचरण शकुंतला डागा द्वारा किया गया। साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि जीवन में कुछ न कुछ संकल्प अवश्य होने चाहिए, मैत्री और करुणा के समावेश से ही मानव प्रगति कर सकता है।

संगठन मंत्री महावीर फलोदिया ने बताया कि नए-पुराने व्रतियों का डाटा संकलित किया जा रहा है। कार्यशाला का समापन भक्तामर अनुष्ठान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा द्वारा किया गया।

बारह व्रत कार्यशाला

कांटाबांजी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेयुप के मंत्री पीयूष जैन ने बारह व्रत के बारे में विस्तार से बताया।

कार्यशाला के आयोजन में महिला मंडल की अध्यक्षा बॉबी जैन ने भी उपस्थित सदन को श्रावक के १२ व्रतों के बारे में समझाया। तेयुप के कोषाध्यक्ष अंकित जैन ने भी इस विषय पर अपनी भावना व्यक्त की। तेयुप के अध्यक्ष हेमंत जैन ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए और सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

मंगलभावना समारोह

बायतु/जसोल।

बायतु की कुलदीपिका मुमुक्षु पूजा बुरड़ व मुमुक्षु शिक्षा बालड़ जैन तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होंगी। इस उपलक्ष्य में स्थानीय तेरापंथ भवन से उद्घोष से शोभा यात्रा निकाली गई जो मुख्य बाजार से होती हुई तेरापंथ भवन पहुँची यहाँ पर मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुमुक्षु पूजा बुरड़ व मुमुक्षु शिक्षा बालड़ ने सभी को अपने जीवन में छोटे-छोटे संकल्प अपनाकर संयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा तथा समता युवा संघ द्वारा मुमुक्षु बहनों एवं उनके परिवारजनों का मंगल अभिनंदन किया गया। संपूर्ण समाज की ओर से पूजा बुरड़ के दादी माँ, माता-पिता पूनम चंद बुरड़ व गीता देवी बुरड़ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मंगलभावना समारोह में कन्या मंडल, गौतम छाजेड़, राणमल लोढ़ा, सुशीला देवी, गीता सुराणा, रेखा सुराणा, संगीता छाजेड़, रोनक बुरड़, हेमलता बुरड़, जसोदा छाजेड़, पायल भंसाली, अमृत बालड़, मदन बालड़ सहित प्रबुद्धजनों ने मंगलभावना व्यक्त की।

इस अवसर पर नेमीचंद छाजेड़, राणमल लोढ़ा, सभा अध्यक्ष जेठमल छाजेड़, महेंद्र चोपड़ा, भागीरथ गोलेच्छा, पुखराज बालड़, राकेश जैन, मोहनलाल गोलेच्छा, नेमीचंद बालड़ आदि गणमान्यजन सहित बाड़मेर, फलसूंड, सवाऊ, बालोतरा आदि आसपास के गाँवों के लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मनोज चोपड़ा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 सितंबर, 2021

✦ *प्रेक्षाध्यान व्यक्ति में भावात्मक परिवर्तन घटित करने का उपक्रम है। इस दृष्टि से यह अणुव्रत का एक सहायक प्रकल्प कहा जा सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

ज्ञानशाला दिवस पर कार्यक्रम

रतलाम।

साध्वी प्रबलयशा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद द्वारा ज्ञानशाला पर आधारित गीतिका के माध्यम से किया गया। तत्पश्चात ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति के माध्यम से बताया कि वो क्या सीख रहे हैं। सर्वप्रथम इशिता दक ने चौबीस तीर्थंकर, निशी दख ने साध्वीप्रमुखाश्री जी, वैभव कटारिया ने ग्यारह आचार्य के नामों की प्रस्तुति दी। तनिष्क दख ने पच्चीस बोल एवं नव्य भांगू ने प्रतिक्रमण की पाटी सुनाई।

बच्चों ने एक लघु नाटिका के माध्यम से अभिभावकों को बच्चों को ज्ञानशाला भेजने विषयक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में नमन कटारिया, गौतम बरबेटा, वंदन बरबेटा, नव्य भांगू एवं ग्रेसी भांगू को प्रतिक्रमण कंठस्थ करने के लिए भावेश मोगरा एवं रवि दख द्वारा पुरस्कृत किया गया।

शिशु संस्कार बोध की परीक्षा में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले समृद्धि भांगू, प्रिंशिका पीपाड़ा, शैली कोठारी, गौतम बरबेटा, रितिका गांधी, सुहानी भंडारी, केशवी भांगू, वैभव कटारिया, प्रणव भंडारी, आराध्या मेहता, नमन कटारिया, पुनित कोटडिया, चेरी मेहता एवं तपस्या कोटडिया को तेरापंथ सभा की ओर से अशोक मोगरा, रोशन कोठारी, शांतिलाल कोठारी ने पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम का संचालन परीधि मेहता एवं मोना कोठारी ने किया। कार्यक्रम की संयोजना में समीक्षा दख एवं साक्षी दख ने योगदान दिया।

ज्ञानशाला दिवस

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन साध्वीश्री द्वारा महामंत्रोच्चार के पश्चात ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नमस्कार महामंत्र पर संगीतात्मक भव्य प्रस्तुति द्वारा प्रारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ सभा परिवार का यह सौभाग्य है कि उन्हें धर्मसंघ की प्रभुत्व संस्था महासभा द्वारा यह विशिष्ट कार्य मिला है। संस्कार संपन्न बच्चे हर प्रकार की विकास यात्रा के आधार हैं। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चे आध्यात्मिक संस्कृति के विधिवत ज्ञाता व प्रवक्ता बनेंगे।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में बच्चों को देखकर यह गौरव के साथ कहा जा सकता है कि इसमें अभिभावकों की जागृति व शिक्षिकाओं का महत्त्वपूर्ण श्रम मुखरित है। बच्चों की कंठस्थ ज्ञान की रोचक प्रस्तुतियाँ हुई एवं सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई। ज्ञानशाला से जुड़े और सरगम के सेमीफाइनल तक पहुँचे तनिषा सहलोत एवं निमांशु सहलोत द्वारा मंत्रमुग्ध करने वाली प्रस्तुति रही। साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्री जी ने सुमधुर गीतिका द्वारा भावाभिव्यक्ति दी।

विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा ने आशीर्वाद दिया एवं विचार रखे। वरिष्ठ श्रावक बद्रीलाल पितलिया, शांतिलाल पितलिया, ललित मांडोत भी उपस्थित थे। प्रशिक्षिकाओं ने भक्ति गीत की प्रस्तुति दी। सभाध्यक्ष मनोज डागा ने सभी का स्वागत किया एवं शुभकामनाएँ दी। मंत्री विक्रम मेहर, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेमम अध्यक्ष लता बाफना, दक्षिण कर्नाटक प्रभारी कंचन छाजेड़ ने शुभकामनाएँ दी। संचालन संयोजिका प्रशिक्षिका प्रिया छाजेड़ ने किया। प्रशिक्षिका वंदना भंसाली, सुधा दुगड़, नीतू बाफना, सीमा सहलोत, सपना छाजेड़ ने तैयारी में श्रम नियोजित किया।

जैन विद्या प्रमाणपत्र वितरण समारोह

पुणे।

ज्ञानशाला दिवस के अवसर पर ज्ञानशाला दिवस एवं जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुणे सभा के कोषाध्यक्ष रतन सेठिया, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अभातेयुप राष्ट्रीय प्रकाशन प्रभारी मनोज संकेलचा, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा कटारिया एवं तेयुप, पुणे के अध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया अपनी पूरी कार्यकारिणी के साथ उपस्थित थे।

समण संस्कृति की पुणे-पिंपरी-चिंचवड़ आंचलिक संयोजक नीलम चोरड़िया एवं महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष सुमन मरलेचा, जैन विद्या के महत्त्व को बताया एवं जन-जन तक पहुँचाने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन जैन विद्या केंद्र व्यवस्थापक राजेश भंसाली ने किया।

जैन विद्या भाग-६ उत्तीर्ण करने पर हेमा सेठिया, बिंदु बरड़िया एवं पुणे केंद्र में सर्वाधिक अंक लाने पर पार्श्व चोरड़िया को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

ज्ञानशाला दिवस

वडोदरा।

तेरापंथी सभा के निर्देशन में साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के बच्चों ने पियानो बजाकर मंगलाचरण से की। तत्पश्चात बच्चों द्वारा रंगारंग का कार्यक्रम हुआ।

साध्वी मलयप्रभा जी ने बच्चों को ज्ञानशाला भेजने के सद्गुण और फायदों के बारे में विस्तार से बताया। सभा अध्यक्ष हस्तीमल मेहता, तेयुप अध्यक्ष पंकज बोल्या, ज्ञानशाला प्रभारी नवरतन पोखरणा और शीला देवी बड़ौला ने अपने वक्तव्य प्रकट किए। अंत में साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने बच्चों की प्रस्तुतियों की प्रशंसा करते हुए मंगलाचरण के पश्चात कार्यक्रम संपन्न किया।

संस्कारों की खाद है जीवन की बुनियाद

इचलकरंजी।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस व पचरंगी तप अनुमोदना कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि भावी पीढ़ी को संस्कारित करने का सशक्त माध्यम है—ज्ञानशाला। संस्कारों की खाद ही जीवन की बुनियाद है। साध्वी सरलप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में स्कूल में प्राप्त होने वाली व्यवहारिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा के महत्त्व पर बल दिया। साध्वी विनयप्रभा जी व साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने पचरंगी तप के तपस्वियों के लिए अभिनंदन गीत का संगान किया।

इससे पूर्व महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने पचरंगी तप करने वाले तपस्यिों को प्रत्याख्यान करवाए एवं तप का महत्त्व बताते हुए सभी को तप की प्रेरणा दी।

महाराष्ट्र ज्ञानशाला संयोजक राजेश सुराणा ने ज्ञानशाला उपक्रम के बारे में अपनी बात रखते हुए ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षिकाओं का साधुवाद किया एवं पश्चिम महाराष्ट्र आंचलिक संयोजिका भारती देवी संकलेचा के कार्यों की सराहना की। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा सामुहिक गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम का संचालन रजनी पारख व नीतू छाजेड़ द्वारा किया गया एवं तप अनुमोदना कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री पुष्पराज संकलेचा ने किया।

ज्ञानशाला स्थापना दिवस

उदासर।

ज्ञानशाला दिवस का समायोजन साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। तेरापंथी सभा के निर्देशन में ज्ञानशाला संचालन बड़े ही सुचारु रूप से चल रहा हैं कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला ज्ञानार्थी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण खुशबू, सौम्या मुणोत ने दिया।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि ज्ञानशाला जीवन निर्माण की प्रयोगशाला है। यहाँ बेस्ट लाइफ के टिप्स दिए जाते हैं। प्रेक्टिकल प्रयोग के द्वारा बालक अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर लेता है।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष तिलोकचंद मुणोत, स्थानीय अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेंद्र चौपड़ा बच्चों के उत्साहवर्धन के साथ उपस्थित थे। सभा मंत्री ने संजु रामपुरिया ने ज्ञानशाला गतिविधियों के साथ अपने विचार रखे। ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने कलाकारों ने स्वर एक्शन के साथ रंग-रंगीली प्रस्तुति देकर परिषद को भाव-विभोर कर दिया। श्रीडूंगरगढ़ से किशनलाल घीया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सहयोग राशि भेंट की। सुरेंद्र चोरड़िया ने अपनी ओर से बच्चों को पुरस्कार प्रदान किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका रीतिका, चांदनी डागा, निहारिका सेठिया, धारा-भूमि रामपुरिया, भारती मुणोत ने कार्यक्रम का संचालन एवं सहयोग में जागरूकता दिखाई। प्रशिक्षिकाओं को भी पुरस्कृत किया गया।

ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम

गुवाहाटी।

समणी निर्देशिका विनीतप्रज्ञा जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। समणी निर्देशिका विनीतप्रज्ञा जी ने कहा कि गुवाहाटी ज्ञानशाला सुंदर रूप से कार्यरत है। गुवाहाटी बड़ा क्षेत्र है और विस्तार की बहुत संभावना है। कार्यक्रम संयोजिकाएँ प्रशिक्षिका एकता बोथरा व राखी बैंगानी ने सभी का स्वागत किया। महावीर अष्टकम से ज्ञानार्थी हर्षिता खटेड़ ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम में सभा मंत्री निर्मल सामसुखा व पदाधिकारीगण, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु भंसाली सहित अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे।

ज्ञानशाला संयोजक अरुण बोथरा ने ज्ञानशाला के परिचालन की जानकारी दी। उपस्थित अतिथियों का सम्मान फूलाम गमछा व साहित्य द्वारा किया गया। शर्मिला मणोत के संचालन में चारों शाखाओं के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला दिवस

पर्वत पाटिया।

ज्ञानशाला परिवार द्वारा ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समणीवृंद द्वारा सामुहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला पर मंगलाचरण की प्रस्तुति दी एवं प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला राष्ट्रीय आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल ने बच्चों को कई जरूरी जानकारी दी तथा कोमल डांगी ने समस्त ज्ञानार्थी एवं प्रशिक्षिकाओं को स्टार ज्ञानार्थी योजना से भी रू-ब-रू कराया। डॉ० समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में बच्चों एवं प्रशिक्षिकाओं की मेहनत को सराहा एवं आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी।

समणी मानसप्रज्ञा जी ने कहानी के माध्यम से बच्चों एवं अभिभावकों को प्रेरणा दी। राष्ट्रीय ज्ञानशाला सह-संयोजक अंजना झाबक ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियों को पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि ज्योति मेड़तवाल, अंजू संचेती एवं अंजना झाबक की उपस्थिति रही। सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं अभिभावकगण सभी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, ज्ञानशाला की गति-प्रगति के बारे में मुख्य प्रशिक्षिका प्रिया पुगलिया ने विस्तृत जानकारी दी। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला संयोजक प्रवीण ओस्तवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला सह-प्रशिक्षिका पिंटू सिंघवी द्वारा किया गया।

ज्ञानशाला दिवस

दक्षिण मंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम से पूर्व बच्चों की रैली निकाली गई। रैली में अभातेयुप के कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरणा की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के द्वारा नवकार मंत्र और दक्षिण मुंबई की प्रशिक्षिका रेखा एम० बरलोटा और पूरी टीम के द्वारा मंगलाचरण से हुई।

सभी महानुभावों का स्वागत विभागीय संयोजिका राजश्री कच्छारा ने किया। कार्यक्रम में बच्चों ने विविध कलात्मक प्रस्तुतियाँ दी। साध्वी प्रियंवदा जी ने बच्चों को प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका रेणू बोलिया ने किया। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका विजयश्री डागलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। बच्चों को प्रोत्साहित करने में महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा।

बारह व्रत कार्यशाला के आयोजन

बारह व्रत श्रावकों का दिव्य आभूषण

बोलारम।

तेरापंथ भवन में आयोजित बारह व्रत कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि भगवान महावीर ने संपूर्ण मानव जाति को धर्म करने का अधिकारी बताया है। प्रत्येक प्राणी के जीवन में मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय एवं योग रूपी कर्मों का भार है। साध्वी ज्योतियशा जी व साध्वी सुरभिप्रभा जी ने कार्यशाला के लिए शुभकामना दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप की भिक्षु प्रज्ञा मंडली के संगायकों द्वारा विजय गीत के संगान के साथ किया गया। तेयुप हैदराबाद के मंत्री वीरेंद्र घोषल ने बारह व्रतों की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। प्रेरणा सुराणा द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन ऋषभ कातरेला द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में बोलारम सभा अध्यक्ष रतन सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष दमयंती देवी सुराणा, सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण, तेयुप उपाध्यक्ष विनोद दुगड़, तेयुप के युवा कार्यकर्तागण व श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप सहमंत्री नीरज सुराणा द्वारा किया गया।

साध्वी ज्योतियशा जी के संसारपक्षीय नानीसा श्रद्धानिष्ठ श्राविका जमनी देवी पुगलिया की स्मृति में उनके सुपुत्र भंवरलाल, जतन पुगलिया तथा पौत्र विक्रम पुगलिया, दोहित्र विनय बरमेचा ने 'सफर शताब्दी का' पुस्तक को साध्वीश्री जी को भेंट की।

बारह व्रत कार्यशाला

अमराईवाड़ी ओढव।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप ने उपासिका संगीता सिंघवी के नेतृत्व में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया। तेयुप के अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया ने बताया कि इस बार पूरे भारत के साथ-साथ नेपाल में ऑनलाइन व ऑफलाइन के माध्यम से बारह व्रत कार्यशाला का कार्यक्रम हो रहा है। उपासिका संगीत सिंघवी ने श्रावक समाज को बारह व्रत के विषय में विस्तार से समझाया एवं सभी उपस्थित लोगों को बारह व्रत का संकल्प करवाया।

कार्यक्रम का संचालन परिषद के सहमंत्री पंकज डांगी ने किया। आभार ज्ञापन किशोर मंडल संयोजक विनय सिंघवी ने किया।

बारह व्रत कार्यशाला

वापी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा साध्वी चरितार्थप्रभा जी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में बड़ी संख्या में वापी के जागरूक श्रावकों की उपस्थिति रही। सभी ने तल्लीनता से बारह व्रत पर विशेष प्रवचन का श्रवण ग्रहण किया और बारह व्रती बनने का संकल्प किया।

बारह व्रत कार्यशाला

कांकरोली।

अभातेयुप के निर्देशन में आयोजित १२ व्रत कार्यशाला का तेयुप द्वारा शतावधानी मुनि संजय कुमार जी स्वामी, मुनि सिद्धप्रज्ञ जी स्वामी के सान्निध्य में कार्यशाला की गई। जिसके तहत श्रद्धालु सेवकों द्वारा १२ व्रत दीक्षा ग्रहण की गई। इस अवसर पर समाज के गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे और तेयुप के सदस्यगण भी उपस्थित रहे।

बारह व्रत कार्यशाला

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा समणी निर्देशिका डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। समणी निर्देशिका डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी द्वारा उपस्थित श्रावक समाज को बारह व्रत के प्रत्येक व्रत को विस्तार से समझाया एवं जिज्ञासा का समाधान किया।

बारह व्रत को समझकर लगभग २५ जनों ने संकल्प पत्र भर बारह व्रत ग्रहण किए एवं समणी जी ने कहा कि ज्यादा से ज्यादा श्रावक बारह व्रती बनें, इस हेतु आह्वान किया। संयोजक के रूप में हीरालाल खिमेसरा का विशेष श्रम रहा। कार्यशाला समापन पर तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने समणी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं उपस्थित श्रावक समाज का आभार ज्ञापन किया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिका आध्यात्मिक अंत्याक्षरी

गांधीनगर, बैंगलोर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में संपूर्ण बैंगलोर की ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों की आध्यात्मिक ज्ञान से सराबोर अंत्याक्षरी प्रतियोगिता हुई। साध्वीश्री जी ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिता हमारे ज्ञान की वृद्धि करने में सहायक बनती है। आज बहनों की प्रस्तुति देखी उसके लिए जो अध्ययन किया वो अवश्य उनके स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति करने में सहायक बनेगी। साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभाजी ने इस प्रतियोगिता हेतु सराहनीय प्रयास व श्रम करवाया।

महासभा के राष्ट्रीय सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा ने ज्ञानशाला की प्रतियोगिता की सराहना की। आंचलिक संयोजक माणक संचेती, सह-संयोजक सुरेश नाहर, सभा मंत्री नवनीत मूथा, तेयुप उपाध्यक्ष रणजीत राखेचा ने अपना वक्तव्य दिया। प्रतियोगिता अनेक राउंड में जैसे संगीत, धुन, एक्टिंग आदि में चली। निर्णायक की भूमिका ललित सेठिया ने निभाई। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला संयोजिका नीता गादिया ने किया। लता गांधी, चेतना वैद मूथा, शिला सियाल का विशेष श्रम रहा। मंजु गन्ना ने आभार ज्ञापन किया।

तप अभिनंदन समारोह

नोहर।

संवत्सरी के बाद भी तपस्या की गंगा नोहर में बह रही है। भाई संजय के मासखमण के अलावा कई तपस्याएँ अब भी चल रही हैं। शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने तपस्वी संजय के अनुमोदना कार्यक्रम में सभी को संबोधित करते हुए कहा कि जैन साधना पद्धति में तपस्या का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिसका संकल्प बल मजबूत होता है वह तपस्या कर सकता है। इंद्रियाँ और मन पर जिसका नियंत्रण होता है वही इस दुष्कर मार्ग पर अपने कदम बढ़ाता है। धर्माराधना के अनेक उपक्रम हैं, उनमें एक है—तपस्या।

तेरापंथ का इतिहास तपस्वी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं से भरा पड़ा है। चार मासी और मासखमण करने वाले तपस्वियों का आँकड़ा तो बहुत बड़ा है। भाई संजय ने मासखमण तप करके आत्मबल का परिचय दिया है। व्यक्ति सब कुछ सह जाता है किंतु भूख को सहना सहज नहीं है। तपस्या का कीर्तिमान भाई संजय ने बनाया है, किंतु यह हमारे चातुर्मास का गौरव बन गया। कार्यक्रम में जैनों के अलावा अन्य समाज के व्यक्तियों ने भी भाग लिया। आसपास के क्षेत्रों के भाई लोग भी काफी संख्या में उपस्थित थे। मुनिश्री ने तपस्वी भाई संजय की अनुमोदना में गीत प्रस्तुत किया। तपस्या का एक दूसरा प्रकार भी मुनिश्री ने बताया कि व्यक्ति क्षमा-मैत्री का मासखमण तप करके अपने मन को शांत और स्वस्थ बनाएँ।

मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल व तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने तपस्वी के अभिनंदन में सामुहिक गीतों का संगान किया। तपोभिनंदन कार्यक्रम में नोहर नगरपालिका अध्यक्ष मोनिका खटोटिया, गंगानगर तेरापंथ सभा आंचलिक अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी, समाज सेवी किशन चाचाण, महेश्वरी सभा के अध्यक्ष राजू थिरानी विशेष रूप से उपस्थित थे। तपस्वी के सम्मान में इन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। भूतपूर्व पार्षद, तपस्वी संजय धर्मपत्नी उषा देवी श्यामसुखा ने अपने पति की लंबी तपस्या पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की व समस्त समाज का आभार व्यक्त किया।

इस प्रसंग पर साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का तपस्वी के प्रति प्राप्त मंगलकामना संदेश का सभा प्रधान मनोज सिपानी, महेंद्र छाजेड़ ने वाचन किया। तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल ने तपस्वी के अभिनंदन में स्मृति चिह्न भेंट किया। सुनीता सुराणा, प्रवीण सिंघी, प्रिया बांठिया, किरण देवी छाजेड़, अंजु देवी सिपानी, विनोद बरड़िया, पुष्पा सिपानी, नीरज बांठिया आदि ने गीत व भाषण के द्वारा तपस्वी की अनुमोदना की। कार्यक्रम का संयोजन साधिका सुशीला बांठिया ने किया।

परिवार सेमिनार का आयोजन

केसिंगा (ओड़िशा)।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा द्वारा एक सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसका नाम परिवार सेमिनार-२०२१ रखा गया। इस सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में बिलासपुर उच्च न्यायालय के न्यायधीश गौतम चोरड़िया की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का आगाज मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। तत्पश्चात महिला मंडल एवं कन्या मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। स्वागत भाषण उड़ीसा प्रांतीय सभा के युवा अध्यक्ष मुकेश ने दिया। एवं अध्यक्ष मुकेश एवं प्रांतीय सभा महामंत्री अनूप कुमार जैन ने कार्यक्रम की किट एवं साहित्य अतिथियों को भेंट किया।

स्थानीय सभा अध्यक्ष गंतराम जैन ने अपने वक्तव्य की प्रस्तुति दी। आचार्यश्री महापज्ञ जी के परिचय का संक्षिप्त परिचय प्रांतीय सभा के उपाध्यक्ष गोविंद जैन ने प्रस्तुत किया। संघ गायक सौरभ जैन ने परिवार गीत की संगान किया। वरिष्ठ सलाहकार तुलसीराम जैन ने सेमिनार के बारे में सटीक एवं संक्षिप्त परिचय दिया।

मुख्य अतिथि न्यायधीश प्रखर वक्ता गौतम चोरड़िया ने इस सेमिनार के माध्यम से परिवार में कैसे रहा जाए, आओ संभालें भारत की धरोहर, उपस्थित जनमानस को परिवार में सौहार्द, स्नेह, प्रेम, भाईचारा के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

मुनि कुणाल कुमार जी ने अपनी गीतिका प्रस्तुत की। सम्मान के क्रम में प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश कुमार जैन, महामंत्री अनूप कुमार जैन, सहमंत्री सुमित जैन एवं कोषाध्यक्ष सुदर्शन जैन ने मुख्य अतिथि गौतम चोरड़िया का सम्मान करते हुए स्मृति चिह्न भेंट स्वरूप प्रदान किया।

कार्यक्रम के संयोजक शुभकरण जैन एवं उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा के डिजिटल मीडिया प्रभारी एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी पूरी ऊर्जा को समर्पित करने वाले युवा कार्यकर्ता मयंक जैन का भी सम्मान उड़ीसा प्रांतीय सभा द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन की कड़ी में इस सेमिनार के संयोजक शुभंकर जैन ने आगंतुक सभी श्रावक-श्राविकाओं सहित मुख्य अतिथि एवं मुनिश्री का विशेष आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद कुमार जी एवं उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा के महामंत्री अनूप कुमार जैन ने किया। इस कार्यक्रम में ओड़िशा प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों के अनेक श्राविकाएँ उपस्थित थी।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला

बालोतरा।

साध्वी काव्यलता जी ने प्रेक्षाध्यान कार्यशाला को शुभारंभ करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का दुनिया को बहुत बड़ा अवदान दिया। प्रेक्षाध्यान आत्म साक्षात्कार का सुंदर प्रयोग है। ध्यान तनाव मुक्ति की औषधि है। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने आत्मसाक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा मधुर गीत का सगान किया। साध्वी ज्योतियशा जी ने प्रेक्षाध्यान की पूर्व भूमिका प्रस्तुत की।

कार्यशाला में सभा अध्यक्ष रतनलाल सुराणा, तेयुप सहमंत्री नीरज सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन समाज के नवीन उज्ज्वल, विनोद, राजेंद्र महावीर, संतोष बाई, पुष्पाबाई, सुशीला बाई, इंदु जैन आदि ने कार्यशाला की प्रशंसा की।

✦ *व्यक्तियों के समूह से आज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

सेवा कार्य

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर Alakendu Bodh Niketan Residential के विशेष रूप से विकलांग ६० बच्चों को भोजन वितरण किया गया।

भोजन वितरण में निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, उपाध्यक्ष अमित बैद, सहमंत्री यश दुगड़, संगठन मंत्री नवीन दुकड़, किशोर मंडल सहप्रभारी एवं कार्यक्रम के प्रायोजक मुदित श्यामसुखा, किशोर मंडल संयोजक कुशल बैद, तेयुप कार्यसमिति सदस्य धनपत बरड़िया आदि सदस्यों ने सहभागिता दर्ज कराई।

वृद्धाश्रम में भोजन वितरण

बारडोली।

तेयुप के मार्गदर्शन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा करुणा फाउंडेशन, बारडोली के अंतर्गत करुणा मंदिर वृद्धाश्रम में भोजन वितरण कर सेवा कार्यक्रम संपादित किया गया। कार्यक्रम के प्रायोजक नोरतमल जेठमल गोखरू रहे।

कार्यक्रम में तेयुप के सहमंत्री संजय लादूलाल बड़ौला, तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक नील दक, पूर्व संयोजक उत्सव मेहता उपस्थित रहे। करुणा फाउंडेशन द्वारा तेरापंथ समाज, बारडोली के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित पत्र प्राप्त हुआ। तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना, मंत्री रौनक सरणोत द्वारा समस्त वृद्धजनों के मंगलमय जीवन हेतु मंगलकामना प्रेषित की गई।

संगठन यात्रा

भुज।

तेयुप के सत्र २०२१-२२ के विशिष्ट प्रोजेक्ट के अंतर्गत संकल्प संगठन यात्रा का शुभारंभ हुआ। जिसके तीसरे सप्ताह में ३४ परिवारों की सार-संभाल की गई। परिषद के अध्यक्ष आशीष बाबरिया ने पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्यों के साथ संगठन यात्रा की। इस सप्ताह में भुज के घनश्याम नगर, हॉस्पिटल रोड, न्यू स्टेशन रोड आदि क्षेत्र के परिवारों का संकल्प संगठन यात्रा के तहत प्रवास हुआ।

प्रत्येक परिवार के निवास के मुख्य द्वार पर तेरापंथ के लोगो के साथ नाम का स्टिकर लगाया गया। जिन परिवार के घर पूज्यप्रवर का फोटो नहीं है, उनको पूज्यप्रवर के फोटो ससम्मान भेंट किए गए। इस यात्रा के अंतर्गत तेयुप में दो-तीन किशोर साथी, नव कन्या मंडल सदस्या, महिला मंडल की ४ सदस्यों को संगठन में जाड़ने हेतु प्रेरित किया गया। इस यात्रा के अंतर्गत टीपीएफ की स्थापना हेतु भी संपर्क कर ६ साथियों को जोड़ने के लिए संकल्पित किया गया। यात्रा के अंतर्गत २ सदस्यों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया गया।

सेवा कार्य

विजयनगर।

तेयुप द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत बापू नगर स्थित गीता अनाथ आश्रम में गौतम टेबा की सुपुत्री कुमारी कृतिका के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में महावीर, गौतम टेबा के सहयोग से अल्पाहार का कार्यक्रम रखा गया। तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत एवं सेवा कार्य टीम के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

कार्यक्रम में तेयुप के उपाध्यक्ष-द्वितीय प्रवीण गन्ना, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरना, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, पूर्व मंत्री श्रेयांस गोलछा, संजय भटेवरा, संजय टेबा एवं सेवा कार्य संयोजक गौतम टेबा आदि उपस्थित थे। सहयोगी परिवार का आभार कार्यक्रम सह-संयोजक सुशील पारख ने किया। गीता आश्रम के संचालक ने परिषद के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

कुशल संचालन प्रतियोगिता का आयोजन

टी-दासरहल्ली।

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा कुशल संचालन प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई, तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल ने प्रतियोगिता का आगाज किया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों में मंच पर आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने की कला को प्रोत्साहित करना था। इसमें किशोर मंडल एवं कन्या मंडल से २० प्रतिभागियों ने भाग लेकर अपने वाक्चातुर्यता का परिचय दिया। साथ ही 'लॉक-डाउन अच्छा या बुरा' विषय पर डिबेट हुआ, जिसमें कन्या मंडल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा रेखा मेहर, मंत्री गीता बाबेल, कन्या मंडल प्रभारी सोनिया पोखरना एवं तेयुप से सहमंत्री प्रथम प्रवीण बोहरा, किशोर मंडल प्रभारी पंकज बाबेल की उपस्थिति रही। किशोर मंडल संयोजक सुजल बोहरा, सह-संयोजक शुभम बाबेल ने मंच संचालन किया। आभार तेयुप मंत्री दिलीप पोखरना ने किया।

कोविड टीकाकरण शिविर

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा अध्यक्ष सुशील भंसाली के नेतृत्व में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में आयोजित कोविड टीकाकरण शिविर में २२० लोगों को टीका लगाया गया। जिसमें सरकारी अस्पताल बंगारप्पानगर का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर बीबीएमपी पार्षद मंजुनाथ, अभातेयुप के कार्यसमिति सदस्य तथा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के संयोजक संजय बैद, परिषद अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेयुप मंत्री विकास छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष नरेश बांठिया, परामर्शकगण राजेश भंसाली, राजेश छाजेड़ तथा परिषद के पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यगण तथा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की टीम की सक्रिय सहभागिता रही। क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी डॉ० पुष्पलता एवं उनकी टीम का सम्मान किया गया।

सेवा कार्य

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा गुरु विद्यापीठ, केंगेरी में निर्वासित ८० निराश्रितों को गुरु पुनवानी प्रॉपर्टीज प्राइवेज लिमिटेड, कुमारा पार्क बैंगलुरु के सहयोग से भोजन करवाया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने प्रायोजक परिवार से उपस्थित संजय बैद सहित इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। संजय बैद ने परिषद द्वारा सेवा कार्य की सराहना की।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, मंत्री विकास छाजेड़, संस्थापक अध्यक्ष राजेश भंसाली, सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी, सहप्रभारी सुपारस पटावरी एवं कार्यसमिति सदस्य विकास छाजेड़, सौरभ दुगड़ ने अपने समय का विसर्जन कर सेवा कार्य में सहयोग किया। मंत्री विकास छाजेड़ ने सभी युवकों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी ने किया।

नि:शुल्क डेंटल और हेल्थ चेकअप

सूरत।

निर्धन बच्चों के लिए नि:शुल्क डेंटल और हेल्थ चेकअप का आयोजन तेयुप द्वारा संचालित आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सालय में किया गया। तेयुप द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सालय में निर्धन, फुटपाथ पर जीवन व्यतीत करने वाले लगभग ३० बच्चों का डेंटल और हेल्थ चेकअप का आयोजन किया गया। चेकअप में आए सभी बच्चों द्वारा नमस्कार महामंत्र का जप कर कार्यक्रम की शुरुआत की।

सभी बच्चों का जनरल हेल्थ चेकअप डॉ० रोहित मेहता और डॉ० विशाल गोयल द्वारा किया गया और डेंटल चेकअप डॉ० रीमा और डॉ० दिव्यांगना द्वारा किया गया। जिन्हें दवाई की जरूरत थी उन्हें दवाई भी तेयुप, सूरत द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करवाई गई।

इस अवसर पर चीफ मैनेजिंग ट्रस्टी बालचंद बेताला की विशेष उपस्थिति रही। बच्चों को चेकअप के लिए लाने में विकास सुखानी का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर तेयुप पदाधिकारी एवं एएमसी संयोजक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अभिनंदन गादिया ने किया।

संत हस्तकला प्रदर्शनी

बालोतरा।

तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा संत हस्त कला और नवकार महामंत्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन एसडीएम नरेश सोनी, सभापति सुमित्रा जैन, ओसवाल समाज अध्यक्ष रूपचंद सालेचा, उद्यमी गौतमचंद गोगड़, सुभाष मेहता, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, मंत्री महेंद्र वैद, महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा, मंत्री संगीता बोथरा, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा, किशोर मंडल संयोजक अक्षय मेहता और कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैदमूथा द्वारा किया गया।

साध्वी मंजुयशा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में कला का बहुत महत्त्व है। तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वियों की कला बहुत सूक्ष्म और सटीक है हर जैन परिवार में नमस्कार महामंत्र की एक कलाकृति होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए नवकार महामंत्र डेकोरेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ताकि हर संभागी अपने हुनर और कल्पना से नवकार महामंत्र का डेकोरेशन कर सकें। इस प्रदर्शनी में साध्वियों द्वारा निर्मित कारीगरी और २७० संभागियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया।

एसडीएम नरेश सोनी ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रदर्शनी में पूर्व नगर परिषद सभापति प्रभा सिंघवी, अभातेयुप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मर्यादा कोठारी, तेरापंथ सभा के जोधपुर संभाग शाखा प्रभारी गौतम सालेचा, लघु उद्योग भारती जोधपुर आंचलिक अध्यक्ष शांतिलाल बालड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

साधना व शिक्षा का संगम ज्ञानशाला

खेड़ब्रह्मा।

ज्ञानशाला आचार्यश्री तुलसी के सपनों का जहान है। जहाँ पर सुसंस्कारित बाल पीढ़ी का निर्माण किया जाता है। क्योंकि यह बाल पीढ़ी हमारे समाज, संघ व राष्ट्र की अमूल्य निधि है। इन बच्चों पर हमारा भविष्य टिका है। उपरोक्त विचार ज्ञानशाला दिवस पर साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहे। साध्वीश्री जी ने कहा कि खेड़ब्रह्मा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बहुत सजग है। प्रशिक्षिकाएँ जागरूक हैं और अपने समय का सम्यक् नियोजन कर रही है।

साध्वी ध्यानप्रभा जी व साध्वी श्रुतप्रभा जी ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभाध्यक्ष शंकरलाल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा अर्चना शाह ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के आकर्षण के मुख्य केंद्र बच्चों ने विभिन्न विधाओं में रोचक प्रस्तुतियों द्वारा ज्ञानशाला का महत्त्व बताया। प्रशिक्षिकाओं ने भी गीतिका द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए तेरापंथ सभा द्वारा पारितोषिक वितरण किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण से किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन अनुपमा अभि छाजेड़ द्वारा किया।

वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन

सिरसा।

तेयुप व अणुव्रत समिति ने संयुक्त प्रयास से छठा वैक्सीनेशन कैंप वर्धमान धर्मशाला में लगाया। शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा जी द्वारा मंगलपाठ से कैंप का प्रारंभ हुआ। तेरापंथ समाज द्वारा लगाए जा रहे निरंतर कैंप से जहाँ तेरापंथ समाज को लाभ मिल रहा है वहीं अन्यत्र समाज भी पूर्ण लाभ उठा रहा है। आए हुए व्यक्तियों ने तेरापंथ समाज द्वारा की जा रही समाज सेवा की प्रशंसा की। कैंप में १८४ व्यक्तियों को वैक्सीन लगी। कैंप पूर्णतया तेयुप मंत्री आनंद सुराणा की देखरेख में लगा। चंपालाल जैन, जेठमल बरड़िया, कुणाल नोलखा, कमल सुराणा, राजेश पुगलिया का विशेष सहयोग रहा। सिविल अस्पताल की टीम द्वारा पूर्ण जागरूकतापूर्वक वैक्सीन लगाई गई।

सामायिक में आध्यात्मिक साधना एवं स्वाध्याय करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ६ सितंबर, २०२१

समता के सागर, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पर्युषण पर्व के तीसरे दिवस पर मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि परम वंदनीय भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का प्रसंग विस्तारपूर्वक फरमाया। पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया कि सम्यक् दर्शन, सम्यक्त्व की प्राप्ति के लिए दर्शन मोहनीय का विलय भी अपेक्षित है। क्षयोपशम, क्षय का उपशम हो। इतना ही नहीं साथ में चारित्र मोहनीय का विषय भी अपेक्षित होता है। अनंतानुबंधी चतुष्क की विलय भी साथ में अपेक्षित है। इसमें एक निष्कर्ष यह निकलता है कि सम्यक्त्व की प्राप्ति के लिए केवल दर्शन मोहनीय के विलय की ही अपेक्षा नहीं, चारित्र मोहनीय के विलय की भी अपेक्षा है।

सम्यक्त्व के लिए चारित्र निर्मलता भी आवश्यक है। सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए सात प्रवृत्तियों का क्षय, उपशम, क्षयोपशम चाहिए। दर्शन सप्तक विलय को प्राप्त हो तब सम्यक्त्व की निष्पत्ति, उपलब्धि होती है। नयसार ने सम्यक्त्व प्राप्त किया मानो नयसार का जीवन धन्य हो गया। एक समय अस्थिर जीवन अवसान को प्राप्त होता है।

हमारी दुनिया की ऐसी व्यवस्था है कि कोई भी प्राणी हो, जन्म लिया है, तो अवसान होगा ही होगा। मृत्यु का होना तो निश्चित है, कब होना, यह सामान्य रूपेण प्रायः अनिश्चित होता है। आदमी को ध्यान रहे कि वह जागरूक रहे। 'समयं गोयम मा पमायए' यह हमारे लिए आदर्श उपदेश है। उत्तराध्ययन आगम का दसवाँ अध्ययन बड़ा प्रेरक है। जो वास्तव में अच्छी प्रेरणा देने वाला सिद्ध हो सकता है।

आत्मा अमर है तो आत्मा आगे भी चली जाती है। नयसार की आत्मा दूसरे भव में सौधर्म देवलोक की होती है। एक दिन हर गति का आयुष्य संपन्न होता है। नयसार का देवगति का आयुष्य भी संपन्न होता है। तीसरे भव में भगवान महावीर की आत्मा मनुष्य के रूप में जन्म लेती है।

सुकुल में जन्म लेने वाले के धर्माराधना में आनुकूल्य हो सकता है। तीसरे भव में चक्रवर्ती भरत का पुत्र, भगवान ऋषभ का पौत्र नयसार का जीव बनता है। नाम रखा मरिचि कुमार। भगवान ऋषभ का अयोध्या में पदार्पण होता है। मरिचि को संपर्क का मौका मिला। भगवान ऋषभ की देषणा का श्रवण भी किया। प्रवचन से भी कितनों का कल्याण हो सकता है।

मरिचि का भगवान ऋषभ की देषणा से चित्त भावित हो गया, वैराग्य उत्पन्न हो गया। इच्छा हुई साधु बन जाऊँ। साधु ध्यान दें उनके नातिलों में भी भव्य आत्माएँ हो सकती हैं। दूसरों को तैयार करना अच्छा उपकार है, सेवा का काम हो सकता है। मरिचि दीक्षित होकर साधु बन गया। आगमाध्ययन शुरू किया। साधु जीवन में आगम का अध्ययन एक संपोषण है, खुराक है। अर्थ के साथ पुनरावर्तन करना बहुत बढ़िया है। हम आगम का स्वाध्याय करते रहें, यह काम्य है।

पर्युषण महापर्व की आराधना के अंतर्गत आज सामायिक दिवस है। सामायिक एक सुंदर साधना है। 'धर्म है, समता-विषमता पाप का अधार है---त्याग कर सावद्य-चर्या सुखद सामायिक करूँ। लीन अपने आपमें हो, मैं भवोदधि को तरूँ। समता धर्म है, सामायिक में समता की साधना है। राग-द्वेष, सावद्य वृत्ति का त्याग है। शनिवार की ७ से ८ बजे शाम की सामायिक साधना कहीं भी कर सकते हैं।

सामायिक में अशुभ योग की प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। सामायिक में समाचार पत्र न पढ़ें। आध्यात्मिक अनुष्ठान चले। मोबाइल को छूना ही नहीं चाहिए। बीच में कभी घंटी भी बंद करनी पड़े तो उसका भी प्रायश्चित लेना चाहिए। सामायिक में जो स्थिति है, समता रहे। आध्यात्मिक स्वाध्याय-साधना चले। सामायिक का समय धार्मिक कार्यों में बीतना चाहिए।

सामायिक संवर की साधना है। सामायिक मूलतः शुभ योग नहीं होता है। सामायिक में शुभ योग हो सकता है। सामायिक अपने आपमें शुभ योग नहीं है, संवर है। साधु-साध्वियों में व गृहस्थों में अपने ढंग की साधना कर सकते हैं। सामायिक में लगभग सूर्यास्त के बाद २० मिनट बीते उसके बाद और सूर्योदय से २० मिनट अवशेष रहे, उससे पहले का समय अछाया काल है। खुले आकाश में नहीं बैठना होता है।

कार, ट्रेन, प्लेन, नौका, टेम्पो में भी सामायिक नहीं करनी चाहिए। सामायिक तो एक जगह स्थित होकर करनी चाहिए। यात्रा में सामायिक नहीं। सापेक्ष संवर कुछ समय का भले कर ले। स्टेशन पर बैठकर सामायिक की जा सकती है। आज पक्खी है। पर्युषण पक्खी का प्रतिक्रमण आज है।

पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया।

मुनि पारसकुमार जी की ४८ की तपस्या संपन्न

मुनि पारस जी पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। इन्होंने ४७ की लड़ी संपन्न कर दी है। आज ४८ की लड़ी संपन्न पूज्यप्रवर की सन्निधि में हो रही है। वैराग्य काल में ५१ की तपस्या की थी। पारस कुमार जी ने तीन पचरंगी, तीन धर्मचक्र सहित अनेक तपस्याएँ की हैं। पूज्यप्रवर ने ४८ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। मुनि पारसकुमार जी को अग्रणी की वंदना करवाई।

पूज्यप्रवर ने अन्य तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाए।

प्रवचन में मुख्यमुनि मुनि महावीर कुमार जी ने गीत का संगान किया। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने आर्जव-मार्दव धर्म पर प्रकाश डाला। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी ने देश व्रत सामायिक पर अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि समता की साधना धर्म-ध्यान का उत्कृष्ट रूप है। साध्वी कौशलप्रभा जी ने सामायिक दिवस गीत का संगान किया। पूज्यप्रवर ने तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाए। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

क्षमापना का दिन वार्षिक महोत्सव का...

(पृष्ठ १६ का शेष)

अनेक संदर्भों में चिंतन-मंथन करने का मौका पड़ता रहता है। आपने तो तीन पीढ़ियों की सेवा का अवसर प्राप्त किया है, वर्तमान में कर रही हैं। आचार्यों को साध्वीप्रमुखा का भी सहयोग अपेक्षित हो जाता है, मिलता रहता है। आप नवमें दशक में प्रवेश कर चुकी हैं, आपके स्वास्थ्य की अनुकूलता बनी रहे। संवत्सरी के संबंध में कोई हमारे से व्यवहार में आसातना हो गई, अप्रियता आ गई हो, निर्णय करने में असातना हो गई हो तो आपसे बारंबार खमतखामणा। आपकी सेवा निरंतर मिलती रहे।

मुख्य नियोजिका जी, साध्वीवर्या जी, मुख्य मुनिजी एवं सभी साधु-साध्वी समाज से खमतखामणा पूज्यप्रवर ने किया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि सबका स्वास्थ्य स्वस्थ रहे, अच्छी साधना चलती रहे। समणीवृंद से भी खमतखामणा किया। बहिर्विहारी साधु-साध्वियों, समणियों से खमतखामणा की। सबके प्रति मंगलकामना व्यक्त की। सभी के स्वास्थ्य की अनुकूलता रहे, अच्छे कार्य, साधना करते रहें।

मुमुक्षु भाई और बहनों श्रावक-श्राविका समाज, बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी व बहुश्रुत परिषद के सदस्य साध्वी राजीमती जी एवं साध्वी कनकश्री जी, उपासक श्रेणी हमारे धर्मसंघ से जुड़ी हुई कितनी केंद्रीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, तेरापंथ विकास परिषद, कल्याण परिषद व्यवस्था समिति के सदस्यों से भी खमतखामणा करता हूँ।

जैन शासन के आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक आदि सभी साधु-साध्वियों, जैनेत्तर धर्मगुरुओं-संन्यासियों, धर्मसंघ से मुक्त व्यक्तियों, गुरुकुलवास के कर्मचारियों एवं राजनीति से जुड़े नेताओं एवं शेष-अशेष को खमतखामणा किया।

वर्षभर के लिए सामुहिक आलोयणा ग्रहण करवाई। साधु-साध्वियों ने आपस में सभी से संवत्सरी संबंधी खमतखामणा की। आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना की।

वक्ता बने प्रवक्ता

अहमदाबाद।

तेयुप द्वारा नवीन वक्ताओं को मंच प्रदान करने के लिए दो दिवसीय 'वक्ता बने प्रवक्ता' के कार्यक्रम का आयोजन शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित किया। तेयुप अध्यक्ष ललित बेगवानी ने स्वागत वक्तव्य के साथ सभी सहभागियों को सकारात्मक ऊर्जा के साथ मोटिवेट किया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने सभी प्रतियोगियों को अच्छे वक्ता से प्रवक्ता बनने के गुण बताए।

सभी सहभागियों ने आचार्यश्री महाश्रमण की अनुपम कृति तीन बातें ज्ञान की पुस्तक से ३४ अध्याय में से चयनित विषय पर ३ मिनट तक वक्तव्य प्रदान किया। निर्णायक मंडल की भूमिका निभाते हुए सुरेंद्र लुनिया एवं जवेरीलाल संकलेचा (उपासक) ने कुल २० सहभागियों का अवलोकन करते हुए प्रथम क्रमांक पर जितेंद्र छाजेड़ एवं अनिता छाजेड़, द्वितीय स्थान के लिए दीपिका बागरेचा, श्वेता छाजेड़ एवं अरविंद संकलेचा का नाम घोषित किया।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक विनोद वडेरा ने किया। संयोजक संजय कोठारी एवं वीरेंद्र सालेचा का संयोजन रहा। कार्यक्रम में अभातेयुप सदस्य राजेश चौपड़ा, पंकज डांगी के साथ तेयुप के उपाध्यक्ष-प्रथम अरविंद संकलेचा, उपाध्यक्ष-द्वितीय पंकज घीया, सहमंत्री अतुल सिंघवी, कोषाध्यक्ष दिलीप भंसाली की सूचक उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में मंत्री कपिल पोखरना ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 सितंबर, 2021

✦ *जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यसनमुक्तता आवश्यक है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

क्षमापना का दिन वार्षिक महोत्सव का स्वरूप है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १२ सितंबर, २०२१

पर्युषण पर्व का समापना दिवस-क्षमा याचना दिवस या खमतखामणा दिवस। भगवान महावीर ने फरमाया है–'क्षमा वीरस्य भूषणं'। क्षमा वीरों का भूषण है। वर्ष भर में किसी भी आत्मा के साथ राग-द्वेष या वैर-विरोध से बंधी गाँठें प्रायः आज के दिन खुल जाती हैं। हम भी इन गाँठों को खोलकर मैत्री भाव से सभी जीवों से खमतखामणा कर पावन बन जाएँ।

क्षमामूर्ति, करुणा के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने क्षमा पर्व पर मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आर्षवाणी है–**खामेमि सव्वे जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मेत्ति में सव्वे भूएसु, वैरं मज्झ न केणई।।** यह श्लोक क्षमा का सागर है। इस श्लोक से जितनी बूँदें ग्रहण कर सकें, ये अमृत की बूँदें हैं। शब्द तो शरीर है, उसके भाव उसकी आत्मा है।

इस श्लोक की आत्मा क्षमा का सागर है। मैं सब जीवों को क्षमा देता हूँ और सब जीव मुझे क्षमा करें। यह क्षमा का आदान-प्रदान है। सब जीवों के प्रति मेरी मैत्री है। किसी के भी साथ मेरा वैर भाव नहीं है। यह श्लोक यदा-कदा भावों के साथ स्वाधीत हो जाए। आत्मा की चेतना को पुष्टि प्राप्त हो सकती है।

हमने अष्टाह्निक पर्युषण पर्वाधिराज महापर्व की आराधना की। कल का दिन संवत्सरी शिखर दिवस था। यह संवत्सरी महापर्व क्षमा से, तपस्या से, साधना से जुड़ा हुआ है। अध्यात्म की दृष्टि से यह वार्षिक महोत्सव का दिन है। सर्वाधिक महत्त्व का दिवस है। अष्टाह्निक पर्व का समापन दिवस है।

क्षमा महान धर्म का पर्व है और सशक्त होने पर भी क्षमा रख लेना बड़ी बात है। हम अभी छद्मस्थ हैं। व्यवहार में कहा-सुनी हो सकती है। अप्रियता का प्रसंग आ सकता है। यह क्षमा का पर्व महास्नान का पर्व है। क्षमा की साबुन से अप्रियता की गंदगी दूर हो जाए। यह वांछनीय है। व्यवहार में कटुता आ जाए तो प्रक्षालन हो जाए। पक्खी आदि भी प्रक्षालन के समय है।

क्षमा का प्रयोग मूल तो भाव से होना चाहिए। व्यवहारिक रूप में भी ले कि अब हमारी बात संपन्न हो गई। मेरा भी काम चारित्रात्माओं से, समण श्रेणी से, श्रावक श्रेणी से पड़ता रहता है। मेरा भावात्मक रूप में तो क्षमा का प्रयोग हो भी गया होगा, व्यावहारिक रूप में भी सबसे खमतखामणा हो जाए ताकि निश्चय और व्यवहार में क्षमा का प्रयोग हो सके।

मेरा ज्यादा काम साध्वीप्रमुखाजी से पड़ता है, जो ५५० साध्वियों में सर्वोच्च स्थान पर हैं, लगभग पिछले ५० वर्षों से साध्वीप्रमुखा का दायित्व निभा रहे हैं। स्वयं भी उस स्थान पर शोभायमान हो रहे हैं। व्यवस्थागत व सिद्धांतों को लेकर गोष्ठियाँ होती रहती हैं। वाचन का क्रम भी चलता है।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

सम्यक्त्व की निर्मलता के लिए कषाय मंदता आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १० सितंबर, २०२१

ध्यान-योग के साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पर्युषण पर्व के सातवें दिवस–ध्यान दिवस पर परम श्रद्धास्पद भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का प्रसंग का विवेचन किया।

एक बार पोतनपुर में हमारे ग्यारहवें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का पदार्पण होता है। अचल और त्रिपृष्ठ ने प्रवचन सुना। महापुरुषों की संगती भी कल्याण का निमित्त हेतु बन सकती है। प्रवचन सुनने से त्रिपृष्ठ को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई। क्षयोपशम सम्यक्त्व ऐसी चीज है, जो आ जाती है, चली जाती है। ये ढीली-ढाली सी सम्यक्त्व होती है।

क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त हो जाए, फिर मानो निश्चिंत है। वापस करने वाली नहीं है। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व भी मजबूत और निर्मल बने। सम्यक्त्व की निर्मलता के लिए ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यथार्थ के प्रति निष्ठा जितनी मजबूत होती है, सम्यक्त्व को पुष्टि प्राप्त हो सकती है। वही सत्य है, वह सत्य ही है, निशंक है, जो जिनेश्वर भगवानों ने प्रवेदित किया है। यह सम्यक्त्व को पुष्ट और निर्मल बनाने का आलंबन है।

सम्यक्त्व की निर्मलता के लिए दूसरी बात है–हमारे कषाय मंदता को प्राप्त हो। तीसरी बात है–तत्त्व-बोध का प्रयास। दीक्षा लेनी है, तो पहले नव तत्त्वों को समझना आवश्यक है। नव तत्त्व जो जैन तत्त्व प्रवेश में समझाए गए हैं, वो याद रहें। उसके तीन द्वार समझना आवश्यक है। त्रिपृष्ठ के भी क्षयोपशम सम्यक्त्व आया था वो कुछ समय बाद विलीन हो गया।

सिद्धांत है कि सम्यक्त्व की अवस्था में आयुष्य का बंध होता है तो नरक गति का बंध नहीं हो सकता। तिर्यंच गति का बंध हो सकता। मनुष्य है, तो आगे वैमानिक देवगति में पैदा होगा। सम्यक्त्व है, तो कितनी ऊँचाई आ जाती है। नरक में जाना है तो सम्यक्त्व से मुक्त होना पड़ेगा। सम्यक्त्वविहीन त्रिपृष्ठ का प्रसंग समझाया कि वे कितने क्रूर रहे उस भव से और नरक गति का बंध किया। वासुदेव के लिए कहा गया है कि राजेश्वरी नरकेश्वरी। आयुष्य पूर्ण कर सातवें नरक में प्रभु की आत्मा उत्पन्न होती है।

उसके आगे बीसवें भव में तिर्यंच योनी में शेर की योनि में उत्पन्न होते हैं। शेर हिंसक प्राणी और पुनः चौथी नरक में पैदा होते हैं। वहाँ से उद्वर्तन कर बावीसवें भव में मनुष्य के रूप में, राजकुमार विमल के रूप में पैदा हुआ। उस भव का प्रसंग समझाया। भव में अहिंसा का संदेश दिया। अंत में चारित्र ग्रहण कर २३वें भव में महाविदेह में चक्रवर्ती बनते हैं। बाद मुनि दीक्षा ग्रहण कर आयुष्य पूर्ण कर सातवें देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

२५वें भव में राजकुमार नंदन के रूप में पैदा हुए। नंदन भी साधु बन गया और एक लाख वर्ष का संयम पर्याय। अंगों का अध्ययन कर कठोर तपस्वी बन गए। वर्तमान के परिप्रेक्ष्य कई साधु-साध्वियाँ अनाहार की लंबी साधना कर रहे हैं।

तेरापंथ की तपस्वी चारित्रात्माओं का हमारे धर्मसंघ में संकलन हो। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के युग की तपस्वी चारित्रात्माओं का विवरण आ जाए तो प्रेरणा मिल सकती है। सभी आचार्यों के युग का तपस्वी चारित्रात्माओं का विवरण आ जाए तो और अच्छी बात है।

२६वाँ भव दूसरे देवलोक का है। प्रभु महावीर सत्ताइसवें भव में अब से २७०० वर्ष पहले वे हमारी इस दुनिया में जन्म लेते हैं। कल हमारा पर्युषण का शिखर दिवस पर्वाधिराज संवत्सरी है। संवत्सरी का दिन वर्ष में एक बार आने वाला होता है। कल प्रतिक्रमण में सर्वोत्कृष्ट ४० लोगस्स का ध्यान होगा।

प्रतिक्रमण में एक ध्यान तो अतिचारों का होता है, जो शुद्धि कराने

वाला होता है। एक ध्यान लोगस्स का होता है जो भक्ति कराने वाला होता है। लोगस्स में २४ तीर्थंकरों की तीर्थयात्रा हो जाती है। यह वर्ष में एक बार ही होता है। सामान्य भाषा में देखें तो यह बड़े लोगों को नजराना भेंट करने के समान है।

संवत्सरी के दिन चारित्रात्माएँ तो चौविहार उपवास ही करते हैं। बाल साधु-साध्वियों को संवत्सरी के दिन करणीय कार्य की प्रेरणा फरमायी। श्रावक-श्राविकाओं को भी उपवास-पौषण करने की प्रेरणा फरमायी। संवत्सरी पर्व अच्छी तरह मनाने का प्रयास करें। ध्यान दिवस पर ध्यान का प्रयोग करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आरोग्यवान, मजबूत संहनन के साथ विनम्र व्यक्ति ध्यान की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

कार्यक्रम में मुख्य मुनिश्री ने ब्रह्मचर्य धर्म पर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीवर्या जी ने शील की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि शील व्रत का पालन करने वाले को देवता भी नमस्कार करते हैं। मुख्य नियोजिका विश्रुत विभा जी ने ध्यान दिवस पर विषय प्रस्तुति देते हुए कहा कि ध्यान के समान दूसरी तपस्या नहीं है, ध्यान के समान कोई अन्य यज्ञ नहीं है। साधक को ध्यान के प्रयोग करते रहने चाहिए। साध्वी चरित्रयशा जी द्वारा ध्यान दिवस पर गीत की प्रस्तुति दी। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**